कौन थे डॉ. सूस?

जैनेट बी. पास्कल

कौन थे डॉ. सूस?

लेखन: जैनेट बी. पास्कल

चित्र: नैन्सी हैरिसन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

अनुक्रम

कौन थे डॉ. सूस?

1985 में प्रिन्स्टन विश्वविद्यालय ने छह लोगों को मानद उपाधियों से नवाज़ा। मानद डिग्री दरअसल उन लोगों को दी जाती है जिन्होंने दुनिया में कुछ महत्वपूर्ण किया हो। 1985 में विश्वविद्यालय के छात्र मानद उपाधियाँ पाने वालों में से एक को लेकर खासे उत्तेजित थे।
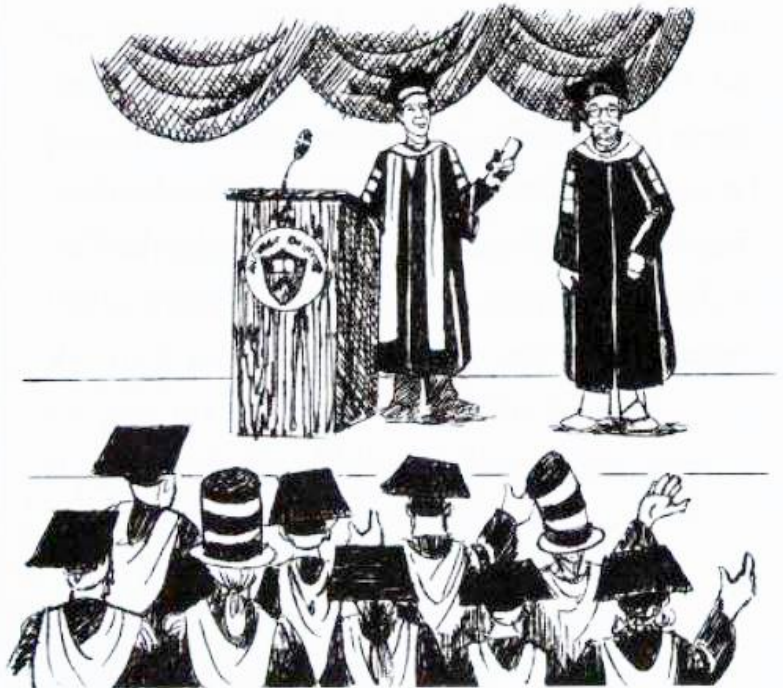
जब यह लम्बा, दुबला-पतला, खिचड़ी दाढ़ी वाला इन्सान अपनी उपाधि लेने खड़ा हुआ, सारे के सारे मौजूद छात्र भी उठ खड़े हुए। "आई एम सैम, सैम आई एम!" वे समवेत स्वरों में बोल उठे। तब छात्रों ने अपनी याद्दाश्त के सहारे *ग्रीन एग्स एण्ड हैम* का सामूहिक पाठ किया। यह सब उन्होंने थियोडोर गायसल को, जो डॉ. सूस नाम से मशहूर थे, यह बताने के लिए किया कि उनकी किताबें छात्रों के जीवन में कितना मायने रखती थीं।

प्रिन्स्टन के इन छात्रों में मिशेल रॉबिन्सन भी शामिल थीं। मिशेल ने बाद में बराक ओबामा से विवाह किया और अमरीका की प्रथम महिला बनीं। 2010 में मिशेल ने पढ़ना शुरू करने वाले बच्चों को पढ़ कर सुनाने के लिए जिस किताब को चुना वह डॉ. सूस की एक और किताब *द कैट इन द हैट* थी। क्योंकि वे यह समझती थीं कि इसके पहले जो किताबें चुनी जाती थीं वे गंभीर और उबाऊ हुआ करती थीं। और तब डॉ. सूस अपनी मज़ेदार तुकबन्दियों और टोप पहने बिलौटे, हॉर्टन और ग्रिंच जैसे किरदारों के साथ आए। तब से पढ़ना सीखना पहले सा उबाऊ काम नहीं रह गया।

अध्याय 1

अजीबो-ग़रीब मशीनें

थियोडोर सूस गायज़ल का जन्म 2 मार्च 1904 में स्प्रिंगफील्ड, मैसाच्युसेट्स में हुआ था। स्प्रिंगफील्ड उस वक्त मोटरकारों, बंदूकों, साइकिलों, टायर और खिलौने बनाने के कारखानों से भरा था। इन कारखानों में एक शराब बनाने की भट्ठी भी थी जिसे टेड (थियोडोर) के दादा ने शुरू की थी। इस शराब कारखाने का नाम था कमबाख़ एण्ड गायज़ल। टेड के पिता इस कम्पनी के अध्यक्ष थे। इसमें बनने वाली बीयर इतनी मशहूर थी कि लोग कम्पनी का नाम ही 'कम बैक एण्ड गज़ल' (लौट कर आओ और गटको) कहा करते थे।

टेड ऐसे परिवार में पला जो शब्दों से खेलना पसन्द करता था। उसकी माँ के परिवार की एक बेकरी थी। वे बचपन में उसमें बनने वाले हर तरह के स्वाद वाले पाई की सूची तुकबन्दियों में बनाया करती थीं। बाद में वे अपने बच्चों को सुलाते वक्त लोरी की जगह इन्हीं तुकबन्दियों को गा कर सुनाया करती थीं। टेड का मानना था कि छन्दों के प्रति उनका प्यार इन्हीं स्मृतियों से पैदा हुआ था।

नन्हे टेड को चिड़ियाघर जाना अच्छा लगता था। वहाँ उसकी खासी आव-भगत भी होती थी क्योंकि उसके पिता चिड़ियाघर चलाने में वित्तीय मदद करते थे। कभी-कभी टेड वहाँ से लौट कर कहता "आज उन्होंने मुझे शेरों और बाघों के पिंजड़े में जाने दिया, उन जानवरों ने मुझे थोड़ा-बहुत चबा भी लिया।" वे अपने किस्से सुनाते समय तिल का ताड़ बनाने के लिए मशहूर थे।

टेड की बड़ी बहन, मार्गरेथा उनसे दो साल बड़ी थीं। पर उसने अपना नाम मार्नी मैका डिंग डिंग गाय रख लिया था।

टेड के पिता को, जिनका नाम भी थियोडोर था, अपने खाली समय में अजीबो-गरीब, पेचीदा आविष्कार करने का शौक था। इन मशीनों मे टेड की पसंदीदा मशीन थी 'रेशमी-मोज़े-उलटी-सीवन-गलती-ताड़ू-आईना'!
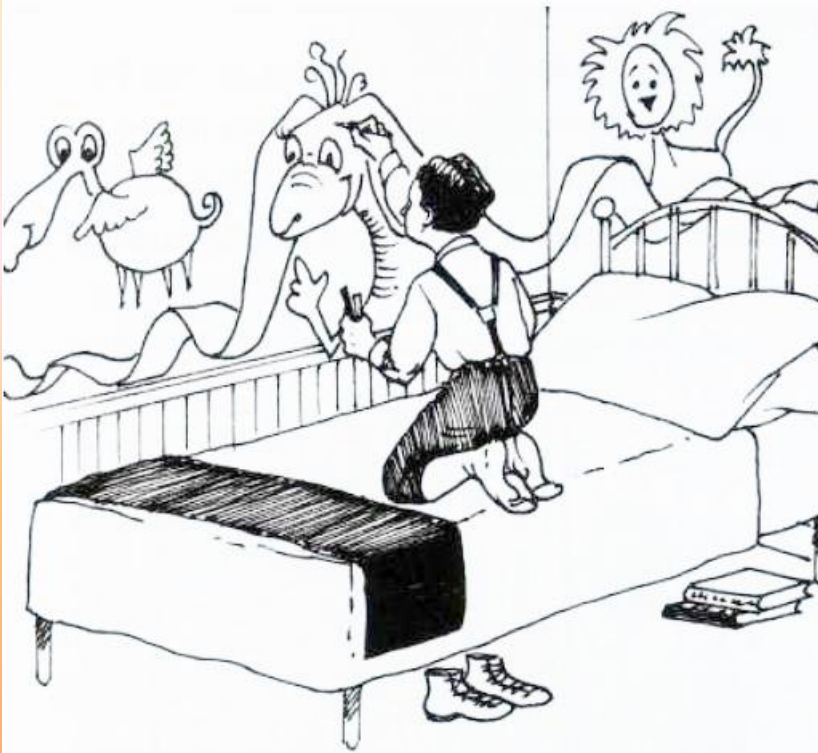
चिड़ियाघर से लौट टेड अपने कमरे की दीवारों पर जानवरों के चित्र आँकता। ये जानवर कभी भी ठीक वैसे न बनते जैसे उसने देखे होते, सो वह उनके नए-नए नाम गढ़ता। उसकी माँ को जो चित्र खासतौर से पसन्द था उस जन्तु के कान नौ फीट लम्बे थे। टेड उसे विन्नम्फ कहा करता था।

स्प्रिंगफील्ड के कई दूसरे परिवारों की तरह गायज़ल परिवार भी जर्मनी से आ अमरीका में बसा था। बड़े होते समय टेड ने जर्मन और अंग्रेज़ी भाषाएं सीखी थी। 1914 में युरोप में पहला विश्वयुद्ध शुरू हुआ। वहाँ के कई देश जर्मनी के विरुद्ध लड़ रहे थे। अमरीका 1917 तक लड़ाई में शामिल नहीं हुआ था। पर अमरीका में बसे जर्मन मूल के लोगों के प्रति अमरीकियों की नाराज़गी बढ़ रही थी।

स्कूल में अक्सर जर्मन-अमरीकी बच्चों पर दूसरे बच्चे धौंस जमाया करते थे। कभी तो टेड पर पत्थर तक फेंके जाते। गायज़ल परिवार लगातार यह सिद्ध करने की कोशिश करता था कि वह भी देशभक्त अमरीकी परिवार है।

टेड के बॉय स्काउट जत्थे में एक प्रतियोगिता ओयोजित की गई। प्रतियोगिता सबसे ज़्यादह लिबर्टी बॉण्ड बेचने की थी। ये बॉण्ड युद्ध में सरकार की मदद करने के लिए जारी किए गए थे। टेड के दादाजी ने एक हज़ार डॉलर के बॉण्ड खरीदे। इस कारण जीतने वाले बच्चों में टेड भी शामिल हुआ।

पुरस्कार समारोह में पूर्व राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट विजेताओं को तमगे दे रहे थे। पर कार्यालय से एक चूक हुई। विजेता दस थे पर रूज़वेल्ट के पास सिर्फ नौ तमगे थे। जब तमगे खत्म हो गए उस वक्त मंच पर अकेला टेड खड़ा था। "रूज़वेल्ट गरजे, "यह छुटका यहाँ क्या कर रहा है?" किसीने उन्हें बताया ही नहीं कि वह भी एक विजेता था। टेड चुपके से मंच पर से सरक गए।

इस घटना के बाद टेड के लिए लोगों का सामना करना और भी मुश्किल हो गया। यहाँ तक कि मशहूर हो जाने के बाद भी वे भाषण देने से कतराते थे। एक बार जब उन्होंने टेलिवेज़न के भेंट-वार्ता कार्यक्रम में शिरकत की वे इस कदर घबरा गए कि उनसे एक भी शब्द बोला न गया।
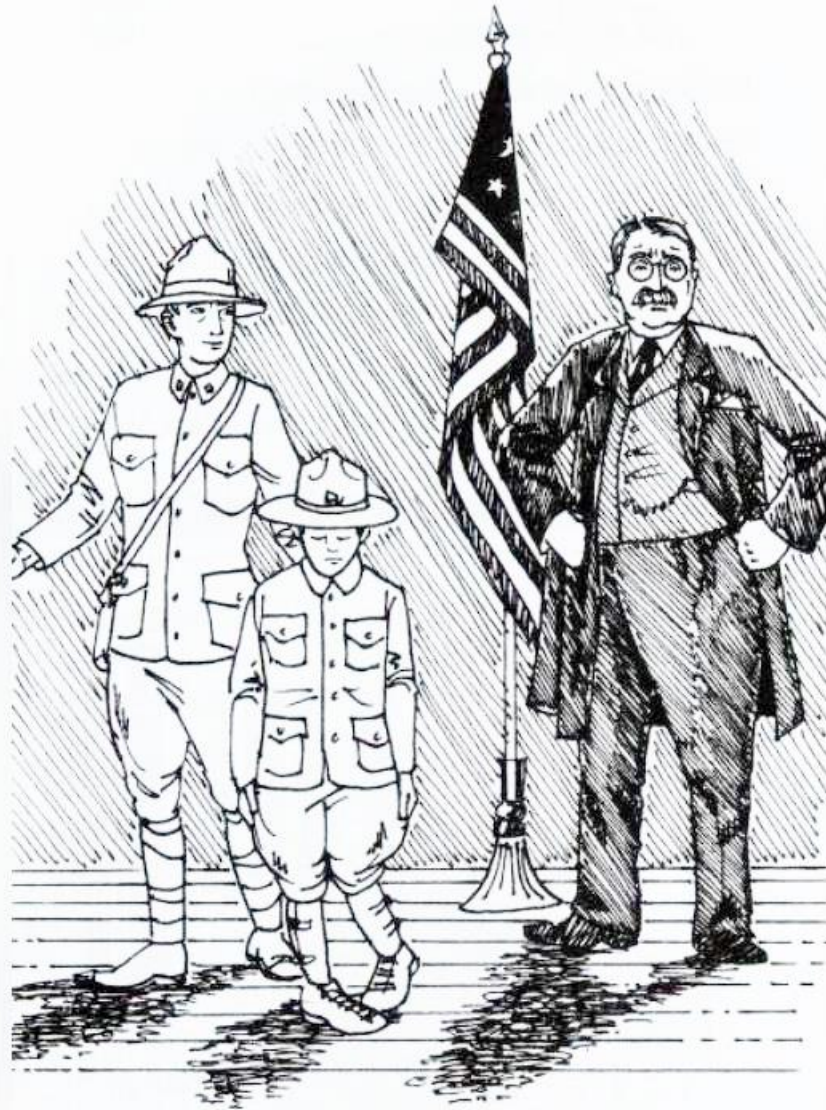
1918 में विश्वयुद्ध खत्म होने पर टेड के परिवार के सामने एक नई समस्या खड़ी हुई। 1920 के आरंभ में ही अमरीका में शराबबन्दी (प्रोहिबिशन) कानून लागू कर दिया गया। इसका मतलब था कि अब शराब बनाना और बेचना दोनों ही गैर-कानूनी बन गया। टेड के परिवार को अपना कारखाना बन्द करना पड़ा। टेड के पिता बेरोज़गार हो गए। परिवार किसी तरह अपना गुज़ारा चलाता रहा। पर शराब का धंधा बन्द होना एक भारी नुकसान था।

टेड उस वक्त हाई स्कूल की पढ़ाई खत्म करने वाला था। पर परिवार के पास पैसों की किल्लत थी। इस किल्लत के बावजूद गायज़ल परिवार शिक्षा को अहमियत देता था। किसी तरह जुगाड़ बैठा कर टेड को कॉलेज पढ़ने भेजने की व्यवस्था की गई।

पर टेड ने कभी अपनी पढ़ाई-लिखाई पर खास ध्यान दिया ही नहीं था। अपना अधिकतर समय उसने स्कूल के अखबार के लिए चुटकुले लिखने में बिताया था। उसकी रुचि सिर्फ एक विषय में रही थी - अंग्रेज़ी भाषा।

शराबबन्दी

1920 में अमरीका में शराब बनाना और बेचना गैर-कानूनी बना दिया गया। अठारहवाँ संशोधन जिसे 'प्रोहिबिशन' का नाम दिया गया था, उन सक्रियकर्मियों द्वारा पारित करवाया गया जो यह मानते थे कि शराब पीने से लोगों की ज़िन्दगियाँ तबाह हो रही हैं। पर शराबबन्दी का प्रयोग खास सफल न हो पाया। माफिया जैसे अपराधी समूह इस पाबन्दी के दौरान शराब की तस्करी कर और ताकतवर बन गए। अल कपोन जैसे घोर अपराधी, लोक-नायक माने जाने लगे। और तो और गैर-कानूनी होने के बावजूद लोग गुपचुप शराब पीते रहे। कई शहरों में 'स्पीकईज़ी' बन गए। ये ऐसी जगहें थीं जहाँ खुफिया पासवर्ड बताने या खास तरह से खटखटाने पर अवैध शराब खरीदी जा सकती थी।

यह संशोधन गायज़ल परिवार जैसे लोगों के लिए खासतौर से मुश्किल सिद्ध हुआ जिनकी आजीविका ही शराब पर निर्भर थी। (टेड यह कभी नहीं भूले कि शराबबन्दी ने उनके परिवार का क्या हश्र किया था। उनके शुरुआती कार्टून शराबबन्दी का मखौल उड़ाते थे।)

जो शहर पहले अपने शराब कारखानों के लिए मशहूर थे, अचानक न केवल अपना सबसे बड़ा व्यवसाय खो बैठे, बल्कि स्थानीय लोगों के रोज़गार का स्रोत भी। कुछ कारखानों ने सोडा, तो कुछ ने अंगूर का रस या मॉल्ट सिरप की बिक्री करने की कोशिश की। वे अपने खरीदारों को साफ-साफ यह भी हिदायत देते थे कि उन्हें क्या नहीं करना है ताकि उनका रस या सिरप शराब न बन जाए।

1930 तक यह स्पष्ट हो गया कि शराबबन्दी सफल नहीं है। सो 1933 में राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट ने एक नए कानून पर हस्ताक्षर कर शराबन्दी खत्म कर दी। और दस्तख़त करने के बाद कहा "एक बीयर के लिए यह सही वक्त है!"

स्कूल में टेड के जो अंग्रेज़ी के शिक्षक थे वे हैम्पशर, डार्टमाउथ कॉलेज में पढ़े थे। उन्हें डार्टमाउथ से इतना प्यार था कि टेड ने तय किया कि वह भी वहीं पढ़ने जाएगा।

N
W
E
S
DARTMOUTH COLLEGE
डार्टमाउथ कॉलेज
NEW HAMPSHIRE
न्यू हैम्पशर
MASSACHUSETTS
मैसाचूसेट्स
BOSTON बोस्टन
SPRINGFIELD
स्प्रिंगफील्ड

अध्याय 2

एक बेहतरीन उड़न गाय
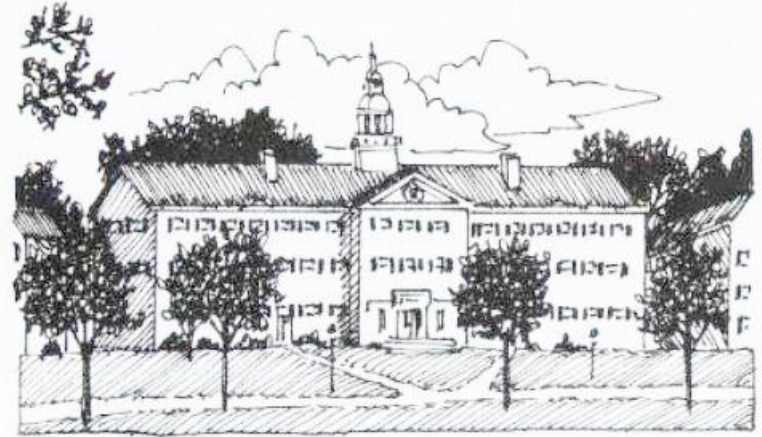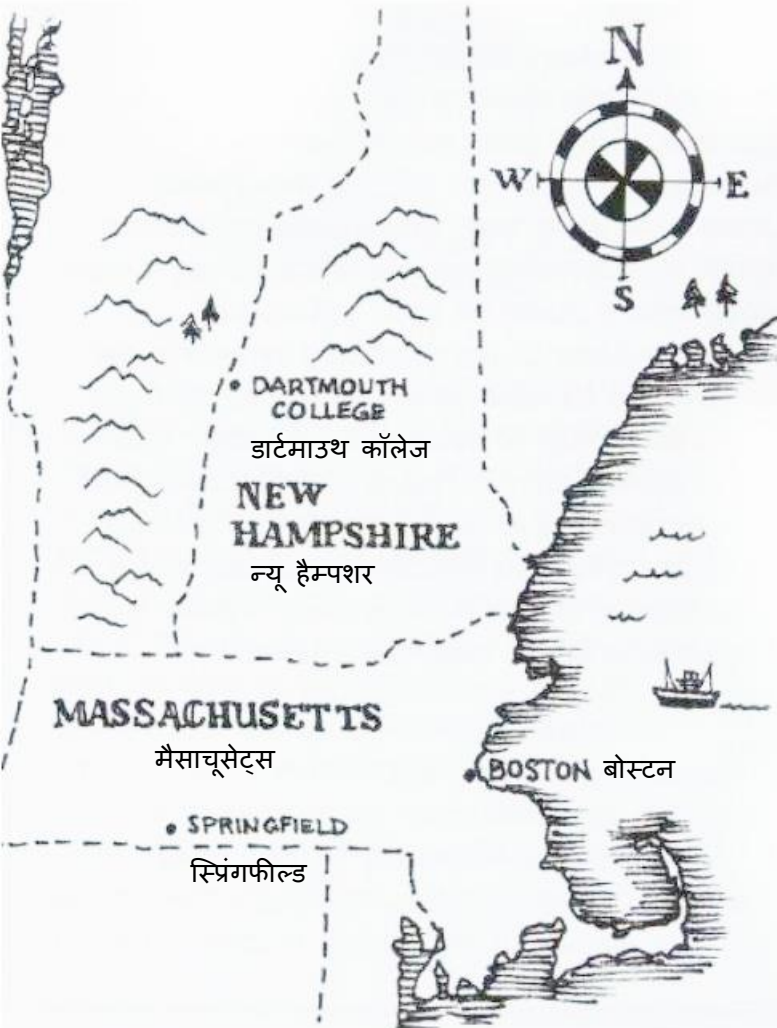
टेड को डार्टमाउथ पसन्द आया। कॉलेज हरे-भरे परिसर में था, उसकी खूबसूरत, पुरानी इमारतें थीं। वहाँ टेड के ऐसे दोस्त बने जिनसे उनका आजीवन रिश्ता कायम रहा। वहाँ पहुँचने के कुछ ही समय बाद टेड को पता चला कि कॉलेज की एक हास्य-विनोद पत्रिका है, *जैक-ओ-लैन्टर्न,* जिसे प्यार से *जैको* कहा जाता था। जैको में काम करना टेड का सपना बन गया।

इस सपने को पूरा करने के लिए टेड अपना सारा समय जैको के दफ्तर में बिताने लगे। अक्सर पत्रिका में काम करने वाले सुबह दफ्तर पहुँच टेड को टाइपराइटर पर सोता पाते।

पहला वर्ष समाप्त होने तक टेड को पत्रिका स्टाफ का सदस्य बना लिया गया। पाठक छात्रों को टेड की कहानियाँ और उनके बनाए चित्र बेहद पसन्द आते थे। यों टेड डार्टमाउथ में एक महत्वपूर्ण शख्सियत बन गए।

इसके बावजूद उनके सहपाठियों का मानना था कि टेड के "सफल इन्सान होने की संभावना बहुत ही कम है।" इसलिए क्योंकि टेड किसी चीज़ के बारे में गंभीर नहीं थे।

स्नातक बनने के एक माह पहले टेड ने एक पार्टी की। एक मेहमान अपने साथ जिन की बोतल ले आया। जब कुछ लड़के बाद में छत पर चढ़ धींगामस्ती करने लगे, मकान-मालिक ने पुलिस बुलाई। शराबबन्दी के चलते जिन गैर-कानूनी थी। टेड भारी परेशानी में फंसे।

सज़ा के बतौर टेड को भविष्य में *जैको* के लिए लिखने की मनाही कर दी गई। पर टेड ने अपना पसंदीदा काम करने का रास्ता निकाल ही लिया। वे पहले भी ओ-ला-ला मैकार्टी और थियो लेसीग (जिसके हिज्जे गायसल के उल्टे थे) के छद्म नामों से लिखते रहे थे। अब टेड ने अपना बीच का नाम सूस का इस्तमाल करना शुरू कर दिया।

टेड ने डार्टमाउथ में अपना पूरा समय और ध्यान *जैको* में लगाया था। ज़ाहिर था कि परीक्षा में उसके अंक अच्छे नहीं आए। टेड के पिता को डर था कि कॉलेज के बाद उनके बेटे को ढंग का काम तक नहीं मिलेगा। पर टेड ने अपने पिता को आश्वस्त करने के लिए कहा कि वे कतई फिक्र न करें, क्योंकि वह इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ऑक्सफर्ड में पढ़ने जा रहा है। यह भी कि वह एक इनाम जीत चुका है जिससे पूरा खर्चा निकल आएगा। पिता बेहद खुश हो गए। उन्होंने एक स्थानीय अखबार को यह खबर दे दी। अगले दिन टेड का नाम अखबार की सुर्खियों में था।

पर एक समस्या थी। टेड ने ऑक्सफर्ड में दाखिले के लिए आवेदन तो किया था, पर कोई वित्तीय पुरस्कार नहीं जीता था। उसे इसकी उम्मीद ज़रूर थी। बहरहरल टेड को पिता को सच बताना पड़ा। वरिष्ठ गायज़ल स्वाभिमानी इन्सान थे। उन्होंने दुनिया के सामने ऐलान कर ही दिया था कि टेड पढ़ने के लिए ऑक्सफर्ड जा रहा है। सो उन्होंने तय किया कि टेड के जाने की व्यवस्था वे खुद करेंगे। 1925 की गर्मियों में टेड इंग्लैण्ड के लम्बे सफर पर निकल गए।

टेड ऑक्सफर्ड में ठीक से जम नहीं सके। विश्वविद्यालय आठ सौ वर्ष पुराना था। वहाँ के छात्र बेहद गंभीर थे। टेड को कक्षाओं के भाषण उबाऊ लगते। फिर भी वे सुन कर नोटस् लेने की कोशिश करते। पर उनका दिमाग इधर-उधर भागता। सो वह अपनी कॉपी के पन्नों पर घसीटा मार चित्र आँका करते। उनकी कॉपी के पन्ने पवन चक्की-नुमा पूंछ वाली मुर्गियाँ, तने हुए रस्से पर चलते कुत्ते और पंखों वाली उडन गाय के चित्रों से भरे होते।
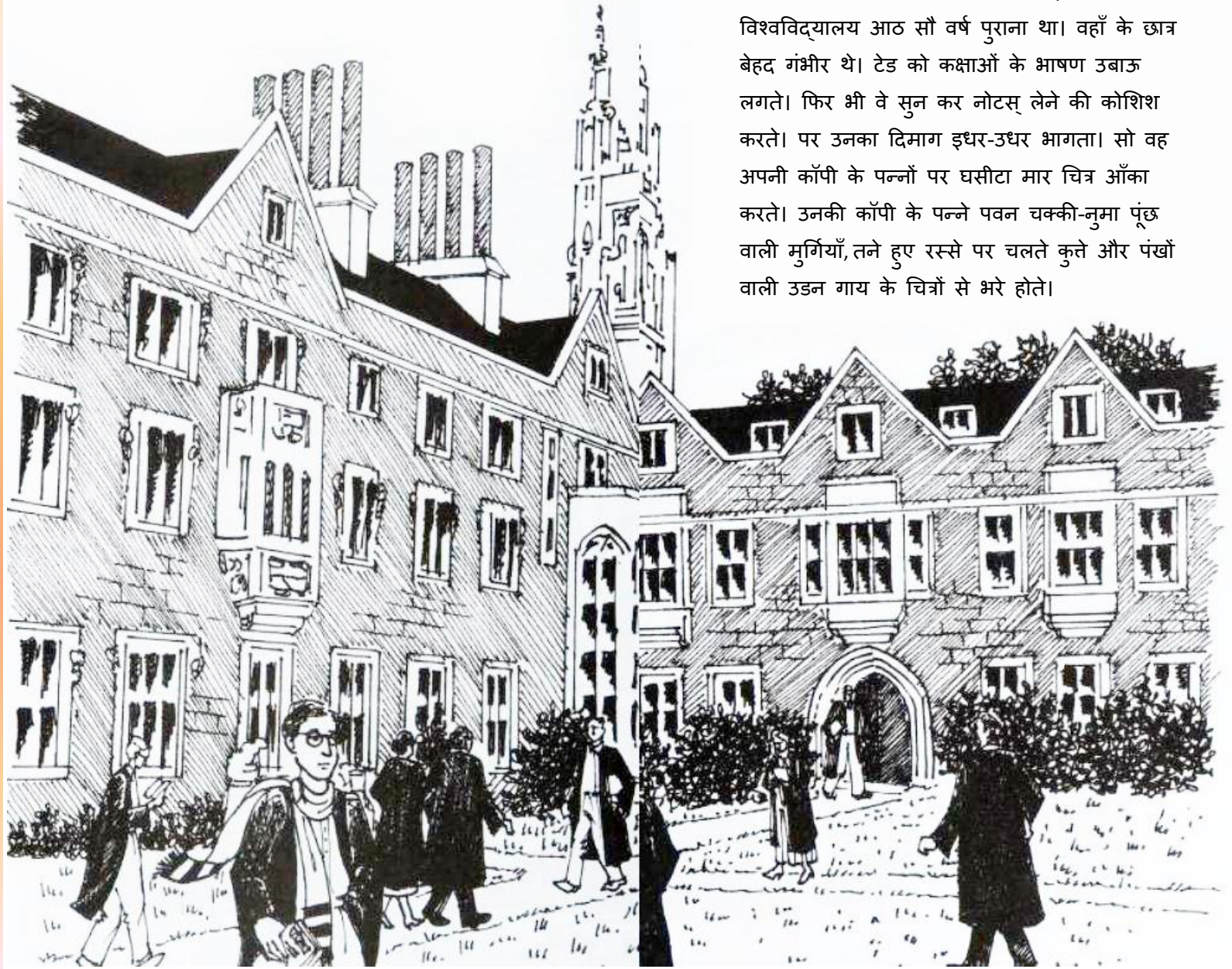
हैलन पामर भी एक अमरीकी छात्रा थीं जो ऑक्सफर्ड में शिक्षक बनने के पाठ्यक्रम में भाग ले रही थीं। एक दिन हैलन ने टेड की कॉपी में झांक कर यह देखा कि आखिर वह क्या आँक रहा है। "अरे! यह तो एक बेहतरीन उड़न गाय है!" उसने खुश हो टिप्पणी की।

हैलन ने टेड से कहा कि उसके चित्र खास हैं। और यह सुझाया कि उसे तो इलस्ट्रेटर (कहानी के अनुरूप चित्र बनाने वाला) बनना चाहिए। हैलन के इस कथन ने टेड का जीवन ही बदल दिया। उसे अब अहसास हो गया कि वह शिक्षक नहीं बनना चाहता था। न ही उसे उपन्यास लिखने की इच्छा थी। वह सिर्फ अपने चित्र-विचित्र जानवर आँकते जाना चाहता था। इसके बाद टेड और हैलन अपना पूरा समय साथ-साथ बिताने लगे। पर वे शादी नही कर सकते थे। उनके पास पैसे ही नहीं थे।

ऑक्सफर्ड से स्नातक पूरा करने के बाद हैलन ने न्यू जर्सी में पढ़ाने का काम तलाश लिया। टेड ने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और अपने माता-पिता के पास स्प्रिंगफील्ड, मैसाच्यूसेटस् लौट आए। वे जानते थे कि उन्हें करना क्या है। पर उन्हें कोई ऐसा तरीका खोज निकालना था जिससे वे अपने चित्रों के ज़रिए अपना गुज़ारा चला सकें।

अध्याय 3

बॉइडस् और बीस्टीस्

अपने माता-पिता के घर में टेड अपना समय कार्टून बनाते और हास्य से भरे लेख लिखते गुज़ारते। वे अपनी रचनाओं को सबको भेजते - न्यू यॉर्क की पत्रिकाओं को, अपने कॉलेज के साथियों को, विज्ञापन एजेन्सियों को। पर हैलन के अलावा किसीने उड़ने वाली गाया या नाचते कुत्तों में रुचि नहीं जताई।

तब एक जानी-मानी पत्रिका *सैटरडे इवनिंग पोस्ट* ने उनका एक कार्टून स्वीकार लिया। टेड ने इस कार्टून में दो सजे-धजे सैलानियों को दर्शाया था। वे एक पालतू ऊँट पर सवार थे और यह कल्पना कर रहे थे कि वे बहादुर खोजी हैं। टेड ने इस कार्टून पर सूस नाम से दस्तख़त किए थे।

पोस्ट ने इसके लिए टेड को पच्चीस डॉलर का भुगतान किया। 1927 में भी यह खास बड़ी रकम नहीं थी। पर इससे महीने का किराया निकल सकता था।

टेड के मन में कम-से-कम इतना साफ हो गया कि वे एक इलस्ट्रेटर के रूप में आजीविका कमा सकते हैं। पर स्थाई आमदनी नहीं होने के कारण हैलन से विवाह अब भी नहीं हो सकता था। सो टेड डार्टमाउथ में अपने एक दोस्त के साथ साझे घर में रहने लगे।

उनका अपार्टमेंट सस्ता तो था पर बेहद गंदा भी था। हर रात सोने के पहले उन्हें चूहों को भगाने के लिए छड़ियों का इस्तमाल करना पड़ता।
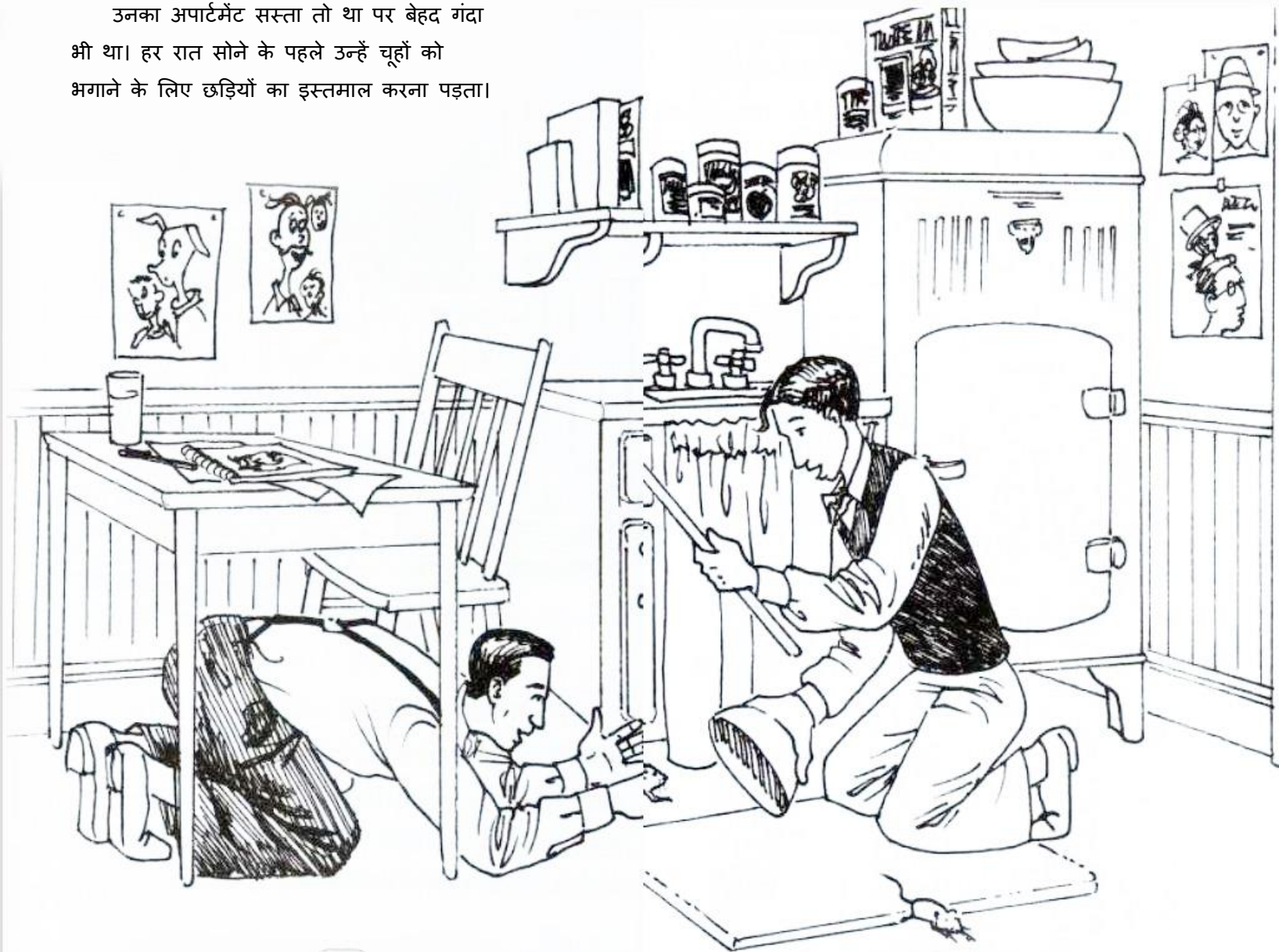
टेड जिस दोस्त के साथ रहता था वह हास्य पत्रिका *जज* में काम करने वाले एक व्यक्ति को जानता था। उसने टेड का परिचय करवाया। पत्रिका ने उसे काम पर रख लिया। टेड को लेखक और चित्रकार के रूप में मासिक वेतन मिलने लगा।

अब हैलन ओर टेड विवाह कर सकते थे। पर उन्हें अपने विवाह की तारीख एक बार बदलनी पड़ी। इसलिए क्योंकि टेड की बहन मार्नी का प्रसव होने वाला था। टेड की इच्छा थी कि पूरा परिवार समारोह में शामिल हो। टेड की भांजी पैगी का जन्म 1 नवम्बर 1927 को हुआ। 29 नवम्बर को टेड और हैलन का विवाह टेड के माता-पिता के घर में सम्पन्न हुआ।

टेड जल्द ही *जज* में लोकप्रिय हो गए। वे उसमें एक नियमित स्तंभ लिखने लगे जिसका शीर्षक *बॉइडस् एण्ड बीस्टीस्* था। स्तंभ में वे अजीबो-गरीब, खिलंदड़ काल्पनिक जन्तुओं को पेश करते। लेख डॉ. सूस के छद्मनाम से छपता था। टेड ने अपने नाम के आगे डॉ. इसलिए जोड़ लिया था क्योंकि उन्हें लगता था कि उनके पिता को ऑक्सफर्ड की पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने से जो निराशा हुई थी उसकी कुछ भरपाई हो सके।

पर दुर्भाग्य से *जज* वित्तीय समस्याओं में उलझा। पत्रिका के पास इतना पैसा तक न था कि कार्यकर्ताओं का वेतन दे सके। पत्रिका में विज्ञापन देने वाली कम्पनियाँ पैसे की जगह अपने उत्पाद के नमूने थमाती थीं। टेड को अक्सर वेतन के नाम पर शेविंग क्रीम या सोडा के डब्बे मिलते। एक बार तो उन्हें 1872 नेल कटर दिए गए! ज़ाहिर था रोज़मर्रा का खर्च निकालने में इससे कोई मदद नहीं मिल रही थी।

तब 1928 में भाग्य ने टेड का साथ दिया। शुरुआत फ्लिट से हुई जो एक लोकप्रिय कीटनाशक था। एयर कंडिशनिंग के पहले लोग गर्मियों में घर की खिड़कियाँ खुली रखते थे ताकि ठण्डी हवा आ सके। पर हवा के साथ हर तरह के मच्छर, कीड़े-मकौड़ों से घर भर जाता था। टेड के दिमाग में यह ख़याल कुलबुलाने लगा कि पुराने ज़माने के नाइटस् (सामन्तों) के लिए गर्मियाँ कितनी तकलीफदेह होती होंगी। कीड़े-मकौड़ों का होना ही मुश्किल बात थी, पर अगर ड्रैगन उड़ आते और काटते तो क्या होता?

टेड ने एक कार्टून बनाया जिसमें जिरह-बख्तर पहने एक सामन्त इसलिए सो नहीं पा रहा है क्योंकि उसके कमरे में एक ड्रैगन घुस आया है। इस चित्र के नीचे की इबारत थी "लानत है! एक और ड्रैगन! वह भी तब जब पूरे किले में फ्लिट का छिड़काव हो चुका है।"

फ्लिट के विज्ञापन अधिकारी की पत्नी ने सलून में बैठे एक पत्रिका में यह कार्टून देखा। उसे यह इतना पसन्द आया कि उसने पति से सिफारिश की कि फ्लिट के सारे विज्ञापन टेड से ही बनवाएं जाएं।

टेड ने विचित्र परिस्थितियों में लोगों पर विशाल कीड़ों का हमला दर्शाते चित्र बनाए। टेड की बदौलत फ्लिट का विज्ञापन अभियान इतिहास का सबसे सफल विज्ञापन अभियान सिद्ध हुआ।
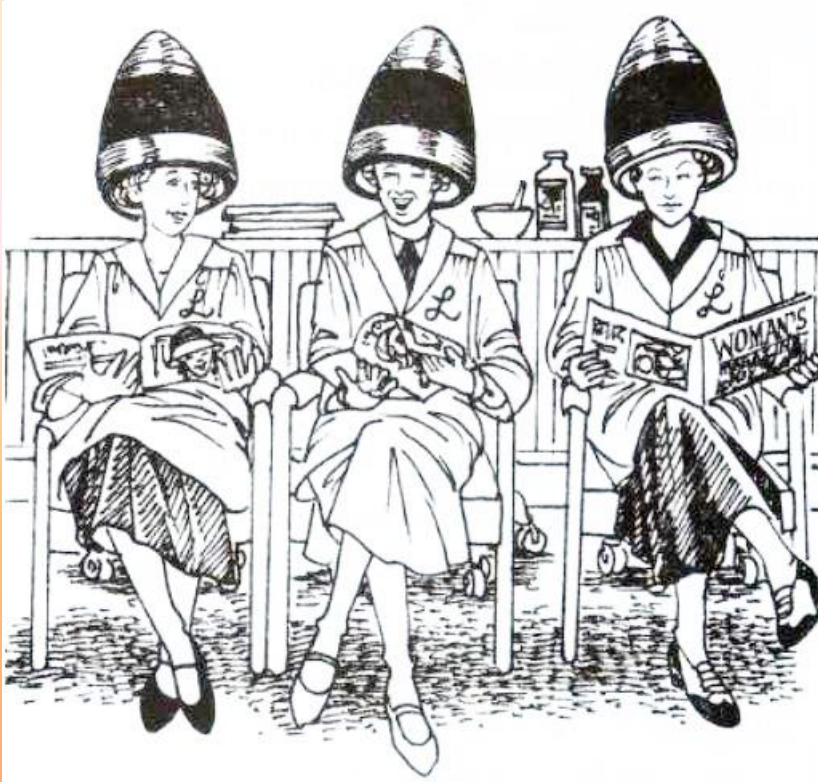
फ्लिट ने टेड को सालाना बारह हज़ार डॉलर के वेतन पर रखा - जो उस ज़माने में खासी बड़ी राशि थी। अगले ही साल स्टॉक बाज़ार टूटा और अमरीका महामन्दी में जा फंसा। देश भर में तमाम लोग बेरोज़गारी, गरीबी और भूख से त्रस्त हुए। पर फ्लिट की बदौलत टेड को पैसों की किल्लत न झेलनी पड़ी।

अपनी नई-ताज़ा हैसियत के चलते टेड और हैलन दावतें करने लगे। उनका सामाजिक जीवन सक्रिय था। अपने दोस्तों के बीच टेड अपनी दिल्लगी और शरारतों के लिए मशहूर हो गए।

आज कम ही लोगों को टेड की ईजाद की गई टैग-लाइन (प्रचार-वाक्य) याद होगा: "क्विक हैनरी, द फ्लिट!" पर बीसवें से लेकर पचासवें दशक तक हरेक अमरीकी इसे जानता था।

विदूषक इसे उद्धृत करते, लोकप्रिय गीतों तक में इसका उपयोग होता। टेड के आँके विज्ञापनों के कारण फ्लिट की बिक्री में बढ़ोतरी हुई और डॉ. सूस के चित्र मशहूर हो गए।
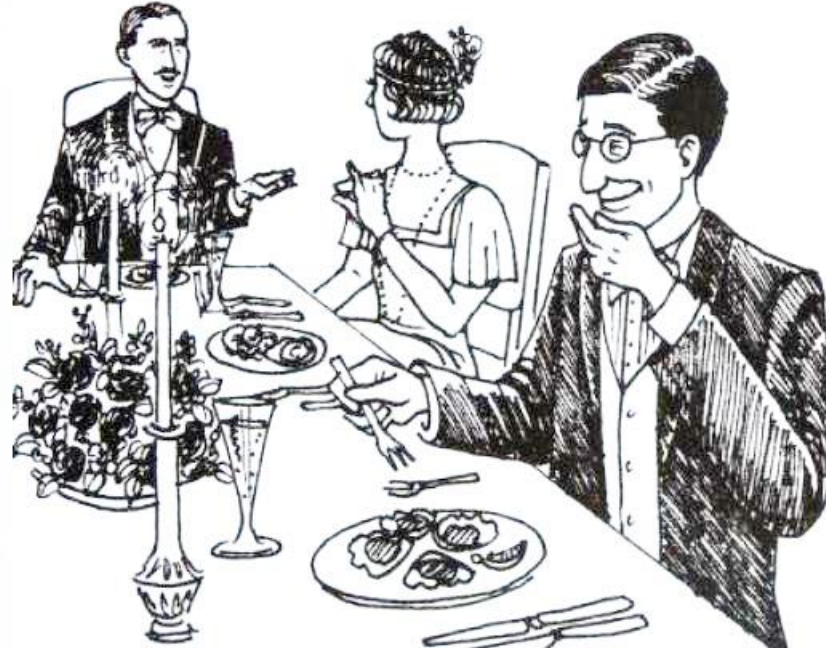
एक बार टेड ऐसी ही दावत के दौरान रसोई में गए और खाने में परोसी जाने वाली सीपी (ओयस्टर) में एक बड़ा-सा प्लास्टिक का मोती रख दिया। दूसरी बार अपने दोस्त के गुसलखाने के टब को जैली और गोल्डफिश से भर दिया।

1931 में टेड की माँ का बावन वर्ष की उम्र में देहान्त हो गया। इतनी कम उम्र में उनके चल बसने से टेड को भारी सदमा पहुँचा। पर उन्हें यह संतोष था कि माँ कम से कम उनकी पहली बड़ी सफलता देखने तक जीवित रही थीं।

फ्लिट ने टेड को वित्तीय रूप से सुरक्षा दे दी थी, पर एक समस्या फिर भी थी। वह यह कि टेड अपना पूरा समय सिर्फ फ्लिट के विज्ञापन बनाते नहीं गुज़ारना चाहते थे। पर फ्लिट के साथ किया गया करारनामा उन्हें अधिकतर दूसरे काम करने से रोकता था। सालों बाद टेड ने लिखा, "मैं यह कहना चाहूँगा कि मैं बच्चों की किताबों के क्षेत्र में इसलिए घुसा क्योंकि मुझमें बाल मानस की समझ थी।" पर यह बात दरअसल सच नहीं थी। बच्चों की किताबों के लिए चित्र बनाना उन चन्द कामों में शामिल था जिन्हें करने की छूट फ्लिट का करारनाम देता था।

न्यू यॉर्क के अपार्टमेंट

गयज़ल दम्पत्ति का पहला अपार्टमेंट मैनहैटन में एक ऐसी सड़क था जिसके सामने घोड़ों का अस्तबल था। पर जल्द ही वे एक बेहतर जगह रहने लगे। उनका नया फोन नम्बर और पास की मछलियों की दुकान के फोन नम्बर में सिर्फ एक संख्या का अंतर था। सो अक्सर उनका फोन इस वजह से घनघनाता क्योंकि मछलियाँ चाहने वाले गलत नम्बर लगा लेते। लोगों को यह बताने की बजाए कि नम्बर गलत है, टेड उनके द्वारा चाही गई मछली का चित्र बना उसे पहुँचाने पहुँच जाते। उस वक्त तो लोग टेड की इस ठिठोली से खास खुश नहीं होते थे। पर ज़रा सोचिए कि आज उन चित्रों का क्या मोल होता?

अध्याय 4

व्हॉट आई सॉ ऑन मलबरी स्ट्रीट

वाइकिंग बुक्स नामक प्रकाशन के एक सम्पादक ने फ्लिट के विज्ञापन देख टेड को स्कूली बच्चों से होने वाली सबसे आम गलतियों पर एक किताब के चित्र बनाने का काम सौंपा। सो टेड ने खुद को बच्चों के उटपटांग उद्धरणों के चित्र आँकते पाया - जैसे "बैन्जमिन फ्रैंकलिन ने दो बिलौटियों को उलटा रगड़ कर बिजली पैदा की थी।" यह किताब 1931 में छपी। टेड इस बात से अचरज में पड़ गए कि किताब वाकई लोकप्रिय बनी। वाइकिंग ने इस कड़ी की दूसरी सचित्र किताब के लिए भी उन्हें ही चुना।

टेड को जल्द ही यह अहसास हो गया कि अगर वे खुद अपनी ही किताब लिखें और उसके चित्र भी बनाएं तो वे ज़्यादा कमा सकते हैं। सो टेड अब अपनी पहली किताब के लिए कोई बेहतरीन विषय तलाशने लगे।
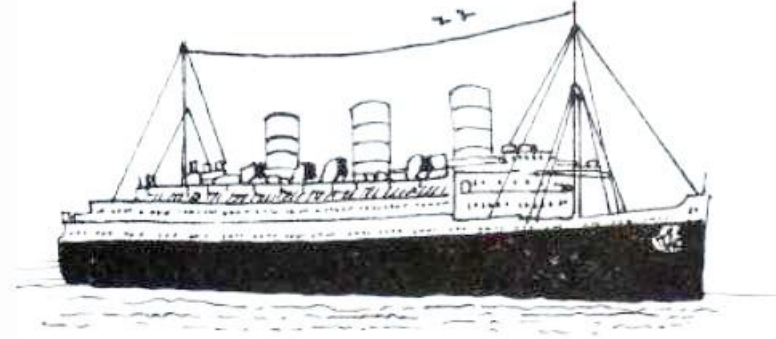
1936 में टेड और हैलन यूरोप भ्रमण पर गए। वहाँ से लौटते समय अपनी कॉपी में किताब के विषय दर्ज करने लगे। जैसे - 'बेवकूफ घोड़ा और गाड़ी', 'उड़ने वाली बिल्ली जो वाइकिंग जहाज़ को खींच रही हो'। पर उन्हें कुछ भी जम नहीं रहा था। इस बीच जहाज़ की तालबद्ध धमक उन्हें पगलाए दे रही थी। सो उन्होंने धमक की लय में शब्द जोड़ने शुरू कर दिए। यों अचानक टेड ने खुद को *"एण्ड दैट इज़ द स्टोरी दैट नो वन कैन बीट/एण्ड टु थिंक दैट आई सॉ इट ऑन मलबरी स्ट्रीट"* आलापते पाया।

और यों टेड को अपनी कहानी मिल गई। एक छोटा लड़का मलबरी स्ट्रीट - जो टेड के गृह नगर की मुख्य सड़क का नाम भी था - पार करता घर जा रहा था। वह इधर-उधर तांक-झांक कर रहा था ताकि घर लौट कर पिता को सब कुछ बता सके।

पर उसे सड़क पर सिर्फ एक साधारण घोड़ा और गाड़ी ही दिखी। पर जब तक वह घर पहुँचा उसने उस घोड़े और गाड़ी को सर्कस की पूरी परेड में बदल डाला, जिसमें नीले हाथी और पूरा का पूरा पीतलिया बैण्ड भी शामिल था।

डॉ. सूस की किताबों की तुकबन्दियाँ इतनी सहज-स्वाभाविक लगती हैं कि लोग यह सोच बैठते हैं कि इन्हें लिखना बड़ा ही आसान रहा होगा। पर सच यह था कि टेड को खूब मेहनत करनी पड़ती थी। "मैं जानता हूँ कि मेरा लेखन ऐसा लगता है माने उसे अट्ठाइस सैकेण्ड में लिख डाला होगा," वे शिकायत करते, "पर मुझे एक-एक शब्द के लिए जूझना पड़ता है।" बच्चों की एक छोटी-सी सचित्र किताब के लिए हो सकता है कि टेड ने दरअसल पाँच सौ या हज़ार पन्ने लिखे हों।

आखिर टेड *एण्ड टु थिंक दैट आई सॉ इट ऑन मलबरी स्ट्रीट* के अंतिम रूप से संतुष्ट हुए। उन्होंने उसे प्रकाशकों को भेजना शुरू किया। पर प्रकाशक किताब को अस्वीकार करते गए। उन्हें लगा कि किताब की कविताएं मंजी हुई नहीं है और बेवकूफी भरी हैं। और इस सबसे भी बुरी बात यह कि उसमें कोई नैतिक सीख तक नहीं है। ज़ाहिर था कि ऐसी किताबें बच्चों को बेहतर बरताव करने में कोई मदद नहीं कर सकती थीं। "बच्चे किताब पढ़ उसका मज़ा ले सकें तो इसमें आखिर हर्ज ही क्या है ?" टेड ने खीझ कर जानना चाहा।

टेड हार मानने ही वाले थे जब उनकी मुलाकात डार्टमाउथ के पुराने दोस्त मार्शल मैकक्लिन्टॉक से हुई। मार्शल को उसी दिन वैनगार्ड प्रेस में बाल सम्पादक का पद दिया गया था। वैनगार्ड अक्सर ऐसी किताबें प्रकाशित किया करता था जो दूसरों से हट कर हों। वैनगार्ड प्रकाशन किताब से खुश हुआ और उन्होंने फौरन हाँ कर दी। टेड इससे इस कदर शुक्रगुज़ार हुए कि उन्होंने किताब के मुख्य पात्र का नाम मैकक्लिन्टॉक के बेटे के नाम पर 'मार्को' रख दिया।

अध्याय 5

हाथी चढ़ा पेड़ पर

समीक्षकों को *मलबरी स्ट्रीट* बहुत पसन्द आई। और बच्चों की किताब के हिसाब से देखें तो वह बिकी भी अच्छी। पर महामन्दी के कारण लोगों के पास बच्चों की किताबों पर खर्चने को पैसा नहीं था। सो गुज़ारा चलाने के लिए टैड को विज्ञापन बनाते रहना पड़ा। वे कहते थे कि उन्हें यह पता ही नहीं था कि वे सचमें लेखक हैं या "महज एक घटिया विज्ञापन रचयिता।"

उनकी दूसरी किताब की प्रेरणा उन्हें अपनी एक पसन्दीदा वस्तु - टोपियों - से मिली। उन्हें और हैलन को सफर करना बेहद पसन्द था। वे जहाँ भी जाते टेड हमेशा स्थानीय टोपियाँ खरीदते - पेरू से मछुआरों का टोप, या युरोप का शानदार हैलमेट। कभी-कभी टेड लिखते-लिखते अटक जाते थे, तब वे अपनी 'सोचने वाली टोपी' पहन लिया करते थे। एक दिन वे एक ऐसी मशहूर टोपी की कल्पना करने वाले थे जिसे एक बिल्ली पहनने वाली थी। पर उसके पहले उन्होंने *द 1500 हैटस् ऑफ बार्थलम्यू कबिन्स्* की रचना की।

टेड और हैलेन को हाल ही में यह पता चला था कि उनके बच्चे नहीं हो सकते। बाद में टेड ने यह कहा था कि उन्हें वैसे भी बच्चों की इच्छा नहीं थी, क्योंकि वे उनके मन में घबराहट पैदा करते थे। "तुम लोग पैदा करो, मैं उनका मन बहलाउंगा," वे अपने दोस्तों से कहा करते थे। पर उनकी भांजी पैगी का मानना था कि अगर उनका बच्चा होता तो टेड को बहुत ही अच्छा लगता।

बहरहाल टेड इस दुखदायक ख़बर से अपनी तरह से निपटे। उन्होंने कल्पना में एक बेटी ईजाद की जिसका नाम क्रिसैन्थिमम-पर्ल रखा और अपनी नई किताब उन्होंने उसे समर्पित की। टेड और हैलन कभी-कभी अपने क्रिसमस कार्ड पर क्रिसैन्थिमम-पर्ल और दूसरे काल्पनिक बच्चों, नोरवल, विकरशैम, और थुण्ड का नाम जोड़ देते थे।

बच्चों की दो किताबें प्रकाशित हो जाने के बाद डॉ. सूस का नाम मशहूर होने लगा था। टेड हमेशा अपना नाम का जर्मन उच्चारण 'सोयस' इस्तमाल किया करते थे। पर उनके अधिकतर पाठक उन्हें 'सूस' ही कहते थे। टेड को यह अच्छा लगता कि 'सूस' का तुक 'मदर गूस' से मिलता था। सो वे भी खुद को सूस कहने लगे।

रैन्डम हाउस वैनगार्ड से कहीं बड़ा प्रकाशन था। उसकी रुचि डॉ. सूस की किताबों में जगी। रैन्डम हाउस के अध्यक्ष बैनेट सर्फ ने टेड को यह वादा किया कि टेड जो कुछ भी लिखेंगे वे उसे छापेंगे। वैनगार्ड के अपने दोस्तों को छोड़ने का टेड को अफ़सोस तो हुआ पर उन्हें रैन्डम हाउस बहुत पसन्द भी था। इसके बाद रैन्डम हाउस आजीवन टेड का प्रकाशक बना रहा। वहाँ काम करने के दौरान टेड के कई करीबी दोस्त भी बने।
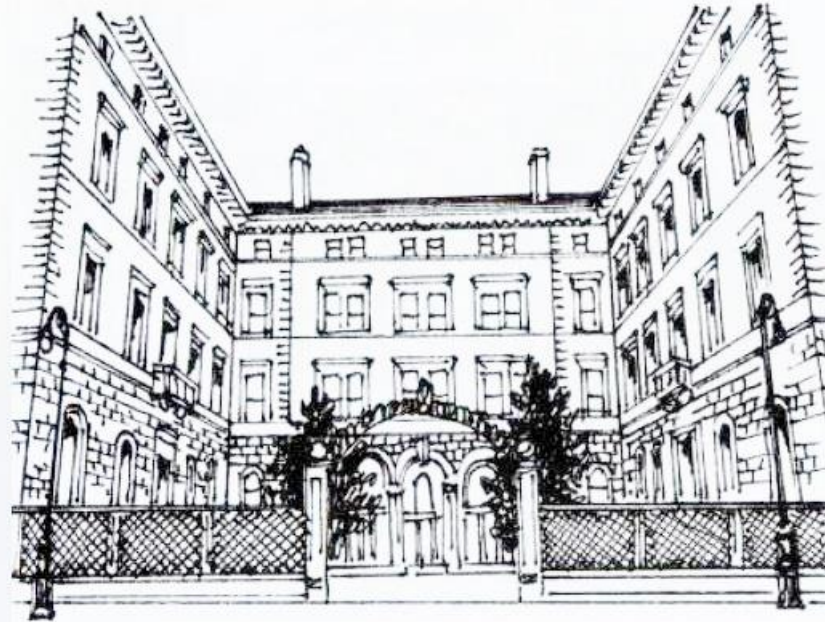
रैन्डम हाउस के लिए उन्होंने जो पहली किताब तैयार की वह वैसी नहीं थी जिसकी प्रकाशक को उम्मीद थी। *द सेवन लेडी गॉडिवास्* वयस्कों की किताब थी, जिसमें नग्न औरतों के चित्रों की भरमार थी। ज़ाहिर है वयस्कों की किताबें टेड की मज़बूती नहीं थीं। इसके अलावा बैनेट सर्फ को यह भी लग रहा था कि किताब बहुत अच्छी भी नहीं बन पड़ी है। पर उन्होंने अपना वादा निभाया। यह किताब बुरी तरह पिटी। टेड बच्चों की किताबों पर लौट आए।

1939 के आसपास एक दिन (कम से कम टेड ने जिस तरह किस्सा सुनाया) टेड से अपने स्टूडियो की खिड़की खुली रह गई। हवा के तेज़ झोंके ने मेज़ पर रखे चित्रों को बिखेर दिया।

जब टेड वापस कमरे में लौटे तो उन्होंने पाया कि हाथी का चित्र पेड़ के चित्र के ऊपर था। हाथी भला पेड़ पर क्यों चढ़ा है? क्या वह भी अण्डा से रहा है? ऐसे तमाम सवाल टेड के मन में उठने लगे। हाथी का नाम उन्होंने हॉर्टन रखा। पर हॉर्टन के साथ आगे क्या किया जाए यह उन्हें सूझ ही नहीं रहा था।

“मैं एक बात से बेहद परेशान हूँ,” हैलन ने एक दोस्त से कहा, “टेड ने हाथी को पेड़ पर तो चढ़ा दिया है, पर उसे यह सूझ ही नहीं रहा कि उसे उतारा कैसे जाए।” आखिर में हैलन ने ही किस्से का अंत सुझाया। हॉर्टन हाथी-पंछी को सेएगा - कुछ उस ही तरह जैसे पहले उसने टेड की कॉपी में एक उड़न गाय को देखा था।

टेड को *हॉर्टन हैचेस् द एग* अपनी दूसरी किताबों से ज़्यादा प्यारी थी। उन्होंने अपने सम्पादक से कहा कि यही सबसे मज़ेदार बाल पुस्तक है। पाठकों को भी किताब बेहद पसन्द आई। आज तक भी हॉर्टन डॉ. सूस का सबसे चहेता किरदार बना हुआ है।

पर 1940 में जब किताब छप कर आई, टेड हाथी-पंछियों के बारे में नहीं सोच रहे थे। वे आस-पास और दुनिया में जो घट रहा था उसे लेकर बेहद चिंतित और दुखी थे। यूरोप में दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था। उनके माता-पिता का मूल देश जर्मनी, हिटलर के नियंत्रण में था।

हिटलर समूचे यूरोप पर कब्ज़ा करना चाहता था। इधर अधिकांश अमरीकी यह उम्मीद कर रहे थे कि अमरीका इस युद्ध में न उलझे। हालाँकि टेड को युद्ध से नफ़रत थी, पर वे मानते थे कि नाज़ियों को रोकना बेहद ज़रूरी है। अगर उनके अजीबो-गरीब चित्र लोगों को फ्लिट खरीदने को मना सकते थे तो क्या वे हिटलर से लड़ने की ज़रूरत पर भरोसा नहीं दिलवा सकते थे? टेड ने अपना ध्यान युद्ध पर केन्द्रित किया और अगले कुछ सालों तक एक भी बाल पुस्तक की रचना नहीं की।

अध्याय 6

प्राइवेट स्नाफू

टेड ने राजनीतिक कार्टून बनाने शुरू किए। इनमें उन लोगों की आलोचना थी जो यह सोचते थे कि अमरीका को युद्ध से अलग-थलग रहना चाहिए। टेड ने उन्हें शुतुरमुर्गों के रूप में दर्शाया जो रेत में सिर घुसा आसपास मंडराते खतरे की उपेक्षा करते हैं।

7 दिसम्बर 1941 को जर्मनी के मित्र देश जापान ने हवाई में पर्ल हार्बर पर बमबारी की। इसके बाद अमरीका युद्ध में शरीक हो गया। अब टेड को लगा कि सिर्फ कार्टून आँकना नाकाफ़ी है।

अड़तीस वर्ष की उम्र में टेड लाम पर लड़ने वाला सिपाही तो बन नहीं सकते थे। फिर भी टेड सेना में भरती हुए। सेना को भी यह पता था कि कार्टून बनाने वाला बन्दूक नहीं चला सकता। सो टेड को हॉलीवुड, कैलिफोर्निया भेज दिया गया। वहाँ टेड ने सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए फिल्में बनाईं।

टेड फिल्में बनाने के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। पर उन्हें लोगों का ध्यान खीचना और बांधे रखना आता था। उन्होंने प्राइवेट स्नाफू (सिपाही घपलेबाज़) की कार्टून फिल्में बनाईं। स्नाफू एक आलसी, लापरवाह सिपाही था जो सब कुछ गलत-सलत करता था। (स्नाफू या एस एन ए एफ यू दरअसल "सिच्युएशन नार्मल, ऑल फाउल्ड अप" का संक्षिप्त रूप था। यानी स्थिति सामान्य है, सब गड़बड़झाला है।) सिपाही घपलेबाज़ सैनिकों को यह बताता था कि उन्हें क्या-क्या नहीं करना चाहिए।

कुछ समय बाद टेड को तरक्की दे सजीव फिल्मों पर काम करने दिया गया। उन्होंने दो फिल्मों की पटकथा लिखने में मदद की। इनमें यह बताया गया था कि अमरीका को युद्ध जीतने के बाद जर्मनी और जापान में क्या करना चाहिए। इन फिल्मों के संशोधित संस्करणों ने ऑस्कर पुरस्कार जीते। पर आज इन फिल्मों को कोई नहीं जानता।

दो-दो ऑस्कर जीतने के बाद टेड ने सोचा कि उन्हें किताबों की बजाए फिल्मों पर ही काम करना चाहिए। पर जल्द ही उनकी यह धारणा बदल गई। उन्हें आभास हो गया कि युद्ध खत्म होने के बाद की दुनिया में संभावनाओं के साथ खतरे भी हैं। सो उन्होंने तय किया कि बच्चों के लिए किताबें लिखने से अधिक ज़रूरी कुछ और हो ही नहीं सकता। उन्होंने लिखा कि "नई पीढ़ी को हमारी पीढ़ी से अधिक बुद्धिमान होना होगा।"
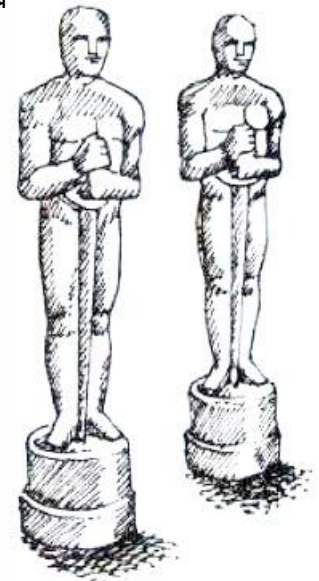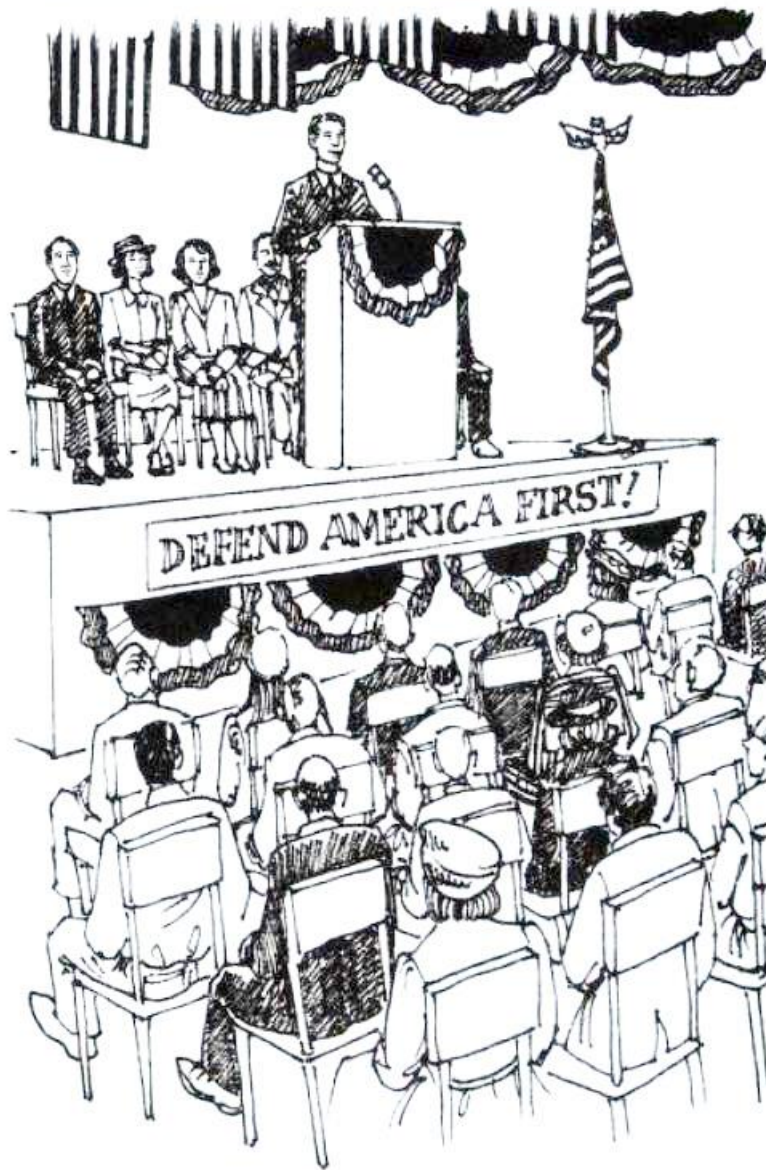
युद्ध का सवाल

1941 की शुरुआत में अस्सी फीसदी अमरीकी नागरिक इस विचार के ख़िलाफ थे अमरीका जर्मनी के विरुद्ध जंग में शामिल हो। अमरीका और युरोप के बीच एक महासागर की दूरी के चलते इन लोगों को, जो आइसोलेशनिस्ट (विलगाववादी) कहलाते थे, यह लगता था कि यूरोप की समस्याएं उनसे बहुत दूर हैं। उनका मानना था कि अमरीका की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी खुद की रक्षा करने की है।

पर टेड खुद को यूरोप के युद्ध से अलग नहीं मान पा रहे थे। उन्होंने कहा, "जब पेरिस पर नात्ज़ियों के घड़घड़ाते टैंकों का कब्ज़ा हो रहा है...मैं अपना दिमाग हॉर्टन हाथी के चित्र बनाने में नहीं रमा सका।" अपने राजनीतिक कार्टूनों में टेड ने यह दर्शानें की कोशिश की कि दुनिया के देश एक-दूसरे से कितने करीब से जुड़े हैं। एक कार्टून में उन्होंने अंकल सैम (अमरीका का प्रतीक) को खुशी से टब में नहाते दर्शाया। अंकल सैम इसमें सोच रहे हैं,"यह पुराना बाथटब मेरे लिए खासा सुरक्षित है।" क्योंकि उनकी आँखें बन्द हैं वे यह देख ही नहीं पा रहे कि बाथटब में एक शार्क, एक मगरमच्छ और एक ज़हरीला कीड़ा भी है, जो उन पर हमला करने को तैयार हैं।

अध्याय 7

बारहसिंगा, नर्ड और हू कौम

दूसरे विश्वयुद्ध के समाप्त होने पर टेड की खुशी को उनकी बहन मार्नी की अकाल मौत ने खत्म कर दिया। पारिवारिक अनबन के कारण मार्नी और टेड अर्से से एक-दूसरे के सम्पर्क में नहीं रहे थे। उनमें सुलह हो पाती इसके पहले ही मार्नी चल बसी। बहन की मौत से टेड इस कदर दुखी हुए कि ज़िन्दगी भर उसके बारे में बात करने से कतराते रहे।

मार्नी

युद्ध खत्म हो चुका था। टेड और हैलन ने तय किया कि वे अब कैलिफोर्निया में रहेंगे। उन्होंने प्रशान्त महासागर के तट पर बसे एक खूबसूरत शहर ला होया के पास एक पहाड़ी पर बनी निगरानी मीनार (ऑब्ज़र्वेशन टावर) ख़रीद ली। यह मीनार सालों से खाली पड़ी थी और युवा प्रेमियों के मिलने की लोकप्रिय जगह थी। उसकी दीवारों पर प्रेमियों ने अपने नाम खोद रखे थे। गायज़ल परिवार के वहाँ रहना शुरू करने के बाद भी कई जोड़े घुस आने की कोशिश करते रहे।

युद्ध के बाद आई टेड की किताबों में एक थी *थिडविक द बिग हार्टेड मूस*। थिडविक इतना नरमदिल था कि वह दूसरों के धकियाने पर भी कुछ न कहता।

कहानी के अंत में टेड ने अपने पाठकों से पूछा, "अगर यह सब तुम्हारे साथ होता तो तुम क्या करते?" टेड अपनी कई किताबें सवाल पूछ कर खत्म करते थे। वे यह तो चाहते थे कि बच्चे किस्से का मज़ा लें। पर वे उन्हें खुद के लिए सोचने में भी मदद करना चाहते थे।

टेड हर साल एक या दो किताबें प्रकाशित करने लगे। ये सभी मज़ाकिया, मौलिक और एक-दूसरे से बिलकुल अलग होती थीं। लोग अक्सर यह जानना चाहते कि उन्हें अपनी किताबों के विषय सूझते कैसे हैं। उनका जवाब होता कि वे शुरुआत 'डूडल' करने (चित्र आँकने) से करते हैं। "मैं एक-दो जन्तुओं को आँकता हूँ। अगर वे एक-दूसरे को काट खाएं तो मैं समझ जाता हूँ कि किताब अच्छी बन पड़ेगी।" पर कुछ समय बाद वे इस सवाल से थक गए। सो उन्होंने कहना शुरू किया कि उन्हें ये विचार 'ऊबर ग्लेच' नामक एक छोटे से शहर के बाशिन्दों से मिलते हैं। "मैं हर गर्मियों में 4 अगस्त को वहाँ जाता हूँ, ताकि अपनी घंटाघड़ी की मरम्मत करवा सकूँ।" इसके बाद से वे सबको यही जवाब देने लगे। राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी की पत्नी जैकलिन तक को यही जवाब मिला।
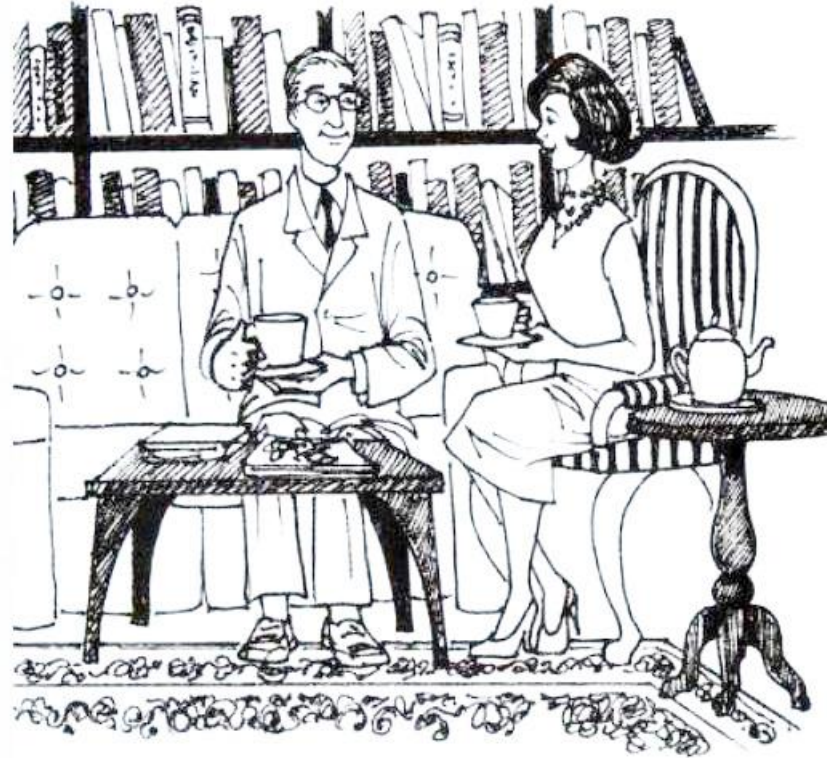
उनकी कुछ किताबों की प्रेरणा उन्हें वास्तविक दुनिया से भी मिली। 1935 में *लाइफ* पत्रिका ने टेड और हैलन को जापान भेजा। यह पता लगाने कि युद्ध के बाद वहाँ के लोगों का जीवन किस तरह निभ रहा है। जापानियों के बारे में टेड की भवनाएं मिलीजुली थीं। युद्ध के दौरान टेड ने जापानियों को, उन जापानियों को भी जो अमरीकी नागरिक थे, खलनायकों के रूप में दर्शाया था।

पर जापान जा वहाँ के शिक्षकों, स्कूली बच्चों आदि से बातचीत कर वे अपने पूर्वाग्रह से उबर सके। उन्होंने पाया कि जापान के लोग हरेक इन्सान के महत्त्व का सम्मान करने के बावजूद सार्वजनिक हित के लिए मिलजुल कर काम कर रहे हैं।
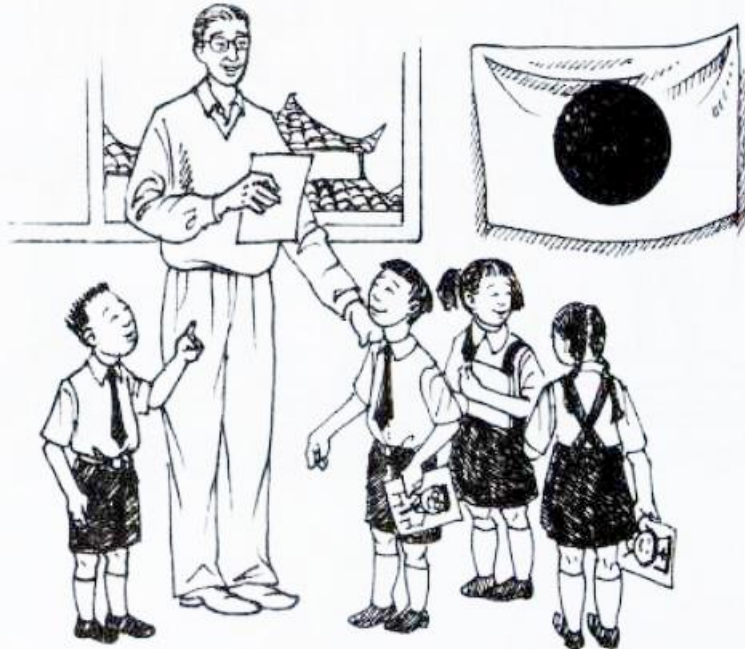
घर लौट कर टेड ने उस विचार की छानबीन की जो उन्होंने जापान में सीखा था। अपनी बात कहने के लिए उन्होंने अपने सबसे चहेते किरदार हॉर्टन हाथी को चुना। अपनी रचना *हॉर्टन हियर्स अ हू* ! में हॉर्टन को हू-विले की नन्ही सी दुनिया को यह सिद्ध कर बचाना है कि दरअसल उनका अस्तित्व है। यह तब ही किया जा सकता है जब हॉर्टन हरेक हू को, सबसे आलसी हू तक को, सबके साथ मिल कर काम करने पर मना सके। हॉर्टन हू कौम के लिए सब कुछ दाँव पर लगाने को तैयार था। इसलिए क्योंकि "एक इन्सान, आखिर एक इन्सान होता है, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो।" यह किताब टेड ने अपने एक जापानी मित्र को समर्पित की।

जब तक *हॉर्टन हियर्स अ हू*! प्रकाशित हुई टेड का जीवन निजी परेशानियों से घिर गया। हैलन को एक भयंकर रोग हुआ जिसके कारण वह अपने आप साँस नहीं ले पाती थीं। उन्हें लोहे से बने फेफड़ों का सहारा लेना पड़ रहा था। यह धातु का बना एक खोल था जो हैलन के लगभग पूरे ही शरीर को ढ़कता था। टेड अस्पताल में घंटों हैलन के पास बैठे रहते। जब हैलन घर लौटीं तो टेड ने आइनों से एक जुगाड़ तैयार किया ताकि वे खिड़की के पास लेटे-लेटे ही बाहर खेल रहे अपने कुत्तों को देख सकें।

हैलन ने लगभग पूरी तरह स्वस्थ होकर डॉक्टरों को हैरत में डाल दिया। मार्च 1955 में वे इतनी ठीक हो गईं कि टेड के साथ डार्टमाउथ जा उन्हें मानद् डॉक्टरेट पाते देख सकें। सालों पहले टेड ने अपने पिता को ऑक्सफर्ड की डिग्री न पाने पर निराश किया था। पर अब उसकी भरपाई हो सकी। अब वे केवल डॉ. सूस नहीं रहे। अब वे *डॉ.* डॉ. सूस थे।

टेड लगभग पूरी तरह से हैलन पर निर्भर थे। वो सभी कामों में उनकी मदद करती थीं और उनका जीवन चलाती थीं। हैलन के बिना वो चेक तक काटने मे असमर्थ थे।

पहला नर्ड

टेड को नए और अजीबो-ग़रीब शब्द गढ़ने मज़ा आता था जैसे थ्नीड और साला-मा-गू। उनका गढ़ा एक शब्द उनकी किताबों से निकल अंग्रेज़ी भाषा का हिस्सा बन गया। डॉ. सूस पहले व्यक्ति थे जिन्होंने *'नर्ड'* शब्द का इस्तमाल किया था। उनकी रचना *इफ आई रैन द ज़ू*, जो 1959 में छपी थी, के एक पात्र जैरल्ड मैकग्रू की योजना थी कि वह "जल मार्ग से का-ट्रू जाएगा और एक 'नर्ड' को लेकर वापस लौटेगा।" यह कोई नहीं जानता कि यह कैसे हुआ, पर साल भर के अन्दर डैट्राइट के किशोर नर्ड शब्द का उपयोग 'ट्रिप' (जो फैशनपरस्त न हो) या 'स्क्वैयर' (उबाऊ शौक वाला/खूसट) के अर्थ में करने लगे। जल्द ही यह शब्द पूरे अमरीका में लोकप्रिय हो गया।
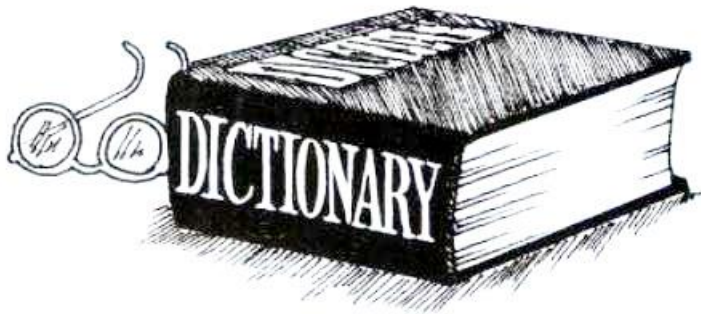
अध्याय 8

आगमन कैट इन द हैट का
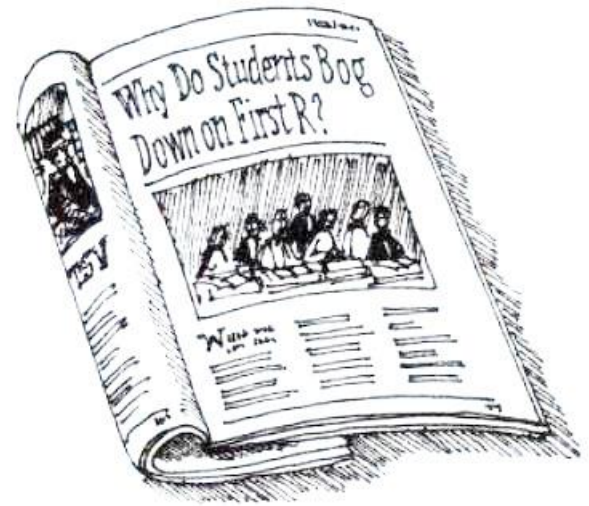
1954 में *लाइफ* पत्रिका में एक लेख छपा। लेख में यह सवाल पूछा गया था कि अमरीकी बच्चों को पढ़ना सीखने में इतनी परेशानी क्यों होती है।

लेख में आगे कहा गया कि क्या इसका कारण यह था कि आरंभिक पाठकों के लिए बनी पाठ्यपुस्तकें बेहद उबाऊ थीं ? शिक्षकों का मानना था कि बच्चे पढ़ना तब सीखते हैं जब वे कुछ शब्दों को बार-बार देखते हैं। इस सोच के चलते पढ़ना सिखाने वाली पाठ्यपुस्तकों में छोटे, टूटे-कटे वाक्यों का उपयोग किया जाता था, जो एक ही बात को बार-बार दोहराते थे। तेज़-चतुर बच्चे भला इन उबाऊ किताबों को क्योंकर पढ़ते? अगर डॉ. सूस जैसा कोई लेखक एक आरंभिक पाठ्यपुस्तक लिखे तो शायद बच्चे उसे सचमें पढ़ें।
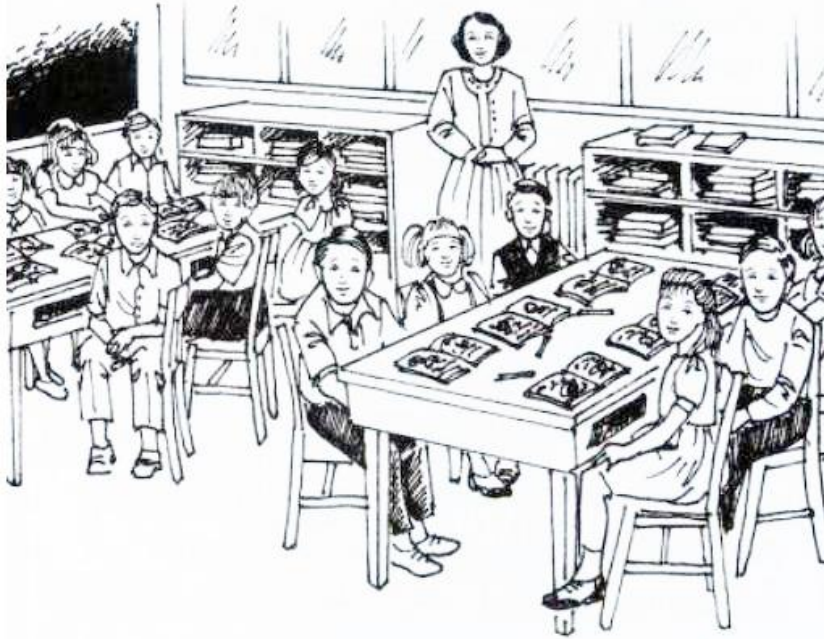
टेड के एक मित्र विलियम स्पॉडलिंग, हॉटन मिफलिन नामक प्रकाशन के लिए काम करते थे। उन्होंने यह लेख पढ़ा और टेड से कहा "मेरे लिए एक ऐसी कहानी लिखो जिसे पहली दर्जे के बच्चे पूरी पढ़े बिना छोड़ ही न सकें।" टेड यह कोशिश करने को राज़ी हो गए। हॉटन मिफलिन और रैन्डम हाउस के बीच एक समझौता हुआ। हॉटन मिफलिन किताब को स्कूलों और पुस्तकालयों को बेचेगा और रैन्डम हाउस किताबों की दुकानों को।

विलियम स्पॉडलिंग ने टेड को करीब तीन सौ ऐसे शब्दों की सूची थमाई जो पहली दर्जे के ज़्यादातर बच्चों को आने चाहिए। टेड को इसी सूची से तकरीबन 225 शब्दों से पूरी किताब तैयार करनी थी।

ज़ाहिर है टेड ने सोचा कि एक छोटी कहानी तैयार करना उनके बाएं हाथ का खेल होगा। पर उन्होंने पाया कि उन्हें सौंपा गया काम लगभग असंभव है। जब भी उन्हें कुछ सूझता वे पाते कि, जिस शब्द की उन्हें दरकार है वह सूची में है ही नहीं। नाकाम कोशिश करते-करते साल भर से ज़्यादा गुज़र गया। आखिर उन्होंने तय किया, "मैं सूची को ध्यान से पढ़ूँगा और अगर मुझे दो ऐसे शब्द मिल जाते हैं जिनका तुक मिलता है, तो वही मेरी किताब होगी।" टेड को 'कैट' और 'हैट' मिले। और यों *कैट इन द हैट* का जन्म हुआ।

कैट इन द हैट का प्रकाशन 1957 में हुआ। पर कई शिक्षकों को किताब पसन्द ही नहीं आई। उन्हें लगा कि वह कॉमिक बुक जैसी है और कतई गंभीर नहीं है। कुछ लाइब्रेरियनों ने किताब को इस उम्मीद से छिपाया कि बच्चे उसे ढूंढ ही न पाएं। हॉटन मिफलिन जो स्कूलों और किताबघरों की बिक्री से जुड़े थे, बहुत अधिक प्रतियाँ नहीं बेच पाए।

पर बच्चों को *कैट इन द हैट* बेहद पसन्द आई। वे न केवल उसे पढ़ते बल्कि अपने दोस्तों को भी किताब के बारे में बताते। किताबों की दुकानों के आलों में वह

मिलती ही न थी। उसकी प्रतियाँ आते ही बिक जातीं। यह सिलसिला थमा ही नहीं। तीन वर्षों में किताब की दस लाख प्रतियाँ बिक गईं। टेड ने टिप्पणी की कि उन्होंने जो कुछ लिखा उसमें "इस किताब पर मुझे सबसे ज़्यादा फक्र है...।"

रैन्डम हाउस में बैनेट सर्फ की पत्नी फिलिस का मानना था कि *कैट इन द हैट* शुरुआत भर थी। वे चाहती थीं कि ऐसी किताबों की एक ऋृखला होनी चाहिए जो कम शब्दों का इस्तमाल करती हों, पर इतनी मज़ेदार हों कि बच्चे उन्हें सचमें पढ़ना चाहें। उन्होंने अपने पति को इस बात के लिए मना लिया कि रैन्डम हाउस के तहत ही एक नई कम्पनी खोली जाए। इस कम्पनी का संचालन फिलिस, टेड और हैलन करें। कम्पनी का नाम बिगिनर बुक्स रखा गया। इसमें डॉ. सूस और दूसरे लेखकों की आरंभिक 'रीडर्स' प्रकाशित की जानी थीं।

बिगिनर बुक्स द्वारा छापी किताबें फौरन ही लोकप्रिय हुईं। उनके चलते रैन्डम हाउस अमरीका में बाल पुस्तकों का सबसे बड़ा प्रकाशक बन गया। टेड ने सेना के पुराने दोस्तों की रचनाओं जैसे पी. डी. ईस्टमैन की *आर यू माय मदर* और *गो डॉग गो* को प्रकाशित किया। उन्होंने मार्शल मैक्लिन्टॉक

की एक किताब भी प्रकाशित की। मार्शल ने सालों पहले टेड को पहला मौका दिया था। टेड ने भालुओं के परिवार के बारे में लिखी गई वे किताबें भी ढूंढ कर छापीं जिनकी रचना स्टैन और जैन बर्नस्टाइन ने की थी।

बैनेट सर्फ को उस शब्द सूची में बड़ा मज़ा आता था जिसका इस्तमाल बिगिनर बुक्स के लेखकों को करना पड़ता था। उन्होंने जानना चाहा कि अगर तीन सौ शब्दों की मदद से किताब लिखना मुश्किल है, तो अगर सूची में उससे भी कम शब्द हों तो क्या होगा।

उन्होंने टेड से पचास डॉलर की शर्त लगाई कि वह केवल पचास शब्दों से एक किताब नहीं लिख सकता। बैनेट सर्फ शर्त हार गए। टेड ने ठीक पचास शब्दों की मदद से *ग्रीन एग्स् एण्ड हैम* की रचना की और उसके चित्र भी बनाए। यह आज भी उनकी लोकप्रिय रचनाओं में शामिल है और सभी समय की बच्चों की किताबों की बेस्ट सैलर सूची में चौथे स्थान पर आती है।

द बेबी बूम / बाल जन्मदर में बढ़ोतरी

बिगिनर बुक्स की शुरुआत बिलकुल सही समय पर हुई। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अमरीकी परिवारों में बच्चों की संख्या बढ़ने लगी। 1957 तक आते-आते पढ़ना सीखने वाले बच्चों की संख्या पहले की तुलना में कहीं अधिक हो गई। यह वह समय भी था जब अमरीका में सोवियत युनियन का खौफ भी था। अमरीकियों को लग रहा था कि इन वामपंथी देशों के स्कूल बेहतर हैं और वे अपने बच्चों को वैज्ञानिक और आविष्कारक बनाने के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं। सो 1950 में अमरीका की सरकार ने स्कूलों और किताबघरों के लिए वित्त उपलब्ध करवाया। इन पैसों का उपयोग बिगिनर बुक्स ॠंखला और उन जैसी अन्य किताबों की खरीद के लिए किया गया।

अध्याय 9

ग्रिंच, टर्टल और स्नीच
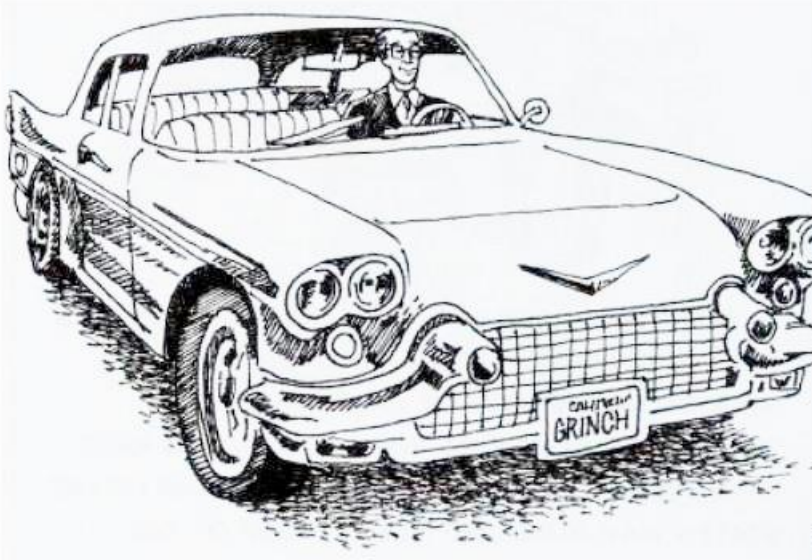
1957 में प्रकाशित *द कैट इन द हैट* ने टेड को लेखकों का महा-सितारा बना डाला था। वे अपने प्रकाशन के अध्यक्ष भी बन चुके थे। और मानो इतना नाकाफी हो उन्होंने एक नए पात्र ग्रिंच का आविष्कार कर डाला था।

टेड को यह इंगित करना पसन्द था कि ग्रिंच दरअसल डॉ. सूस ही है। उनकी गाड़ी की लाइसेन्स तख्ती पर 'ग्रिंच' लिखा था। इस नाम के बारे में वे कहते थे, "मैंने उसका चित्र आँका और देखा, मुझे फौरन पता चल गया कि वह कौन है।"

हाउ द ग्रिंच स्टोल द क्रिसमस छपते ही लोकप्रिय हो गई। कुछ सालों बाद टेड के पास उनके पुराने मित्र चक जोन्स का फोन आया। चक अब एक मशहूद एनिमेटर थे। उन्होंने रोड रनर और वाइली कोयोटे जैसे चरित्रों की रचना की थी। वे टेलिविज़न के लिए ग्रिंच का एनिमेटेड संस्करण बनाना चाहते थे। टेड को इस विचार से पहले
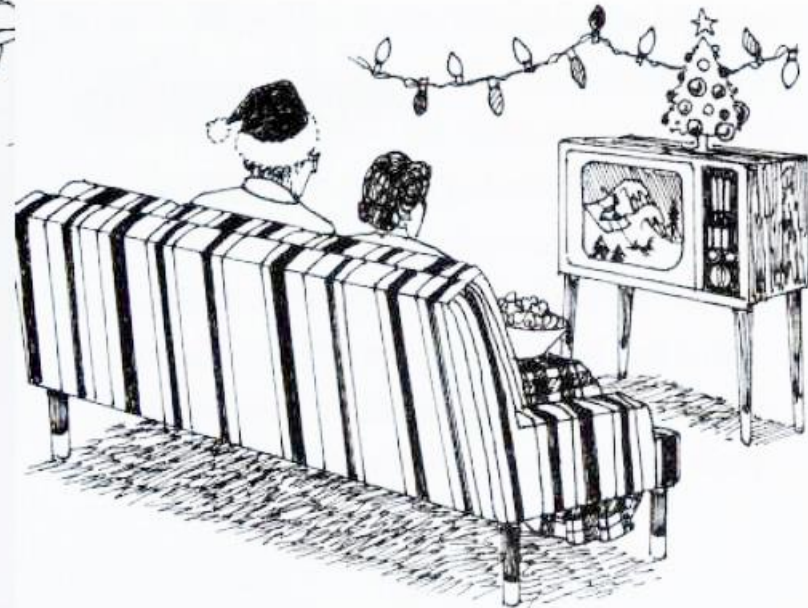
तो उलझन हुई। पर उन्हें जोन्स पर पूरा भरोसा था। उन्होंने ग्रिंच को हरा दर्शाने तक की अनुमति दे दी (किताब में उसे काला-सफेद दिखाया गया था और उसकी आँखें गुलाबी।) ग्रिंच क्रिसमस स्पेशल 1966 में टीवी पर दिखाया गया और तब से आज तक त्यौहार के मौसम का चहेता टीवी कार्यक्रम बना रहा है।

टेड और हैलन का जीवन आखिरकार वैसा था जैसा उन्होंने कल्पना में चाहा था। उन्हें पैसों की किल्ल्त नहीं थी। सो टेड को अब विज्ञापनों पर काम करने की ज़रूरत नहीं थी। हैलन बखुशी रोज़मर्रा की सारी ज़िम्मेदारियाँ निभातीं ताकि टेड अपना पूरा समय लिख और आँक सकें। उनके खुद के बच्चे तो थे नहीं, पर टेड की भांजी पैगी उन्हें बेहद अज़ीज़ थी।

पैगी

पैगी जब छोटी-सी थी तब से ही टेड को उसके साथ खेलना अच्छा लगता था। बहन मार्नी से बोलचाल बन्द होने के बावजूद टेड पैगी के सम्पर्क में बने रहे।

जीवन का दूसरा दशक पूरा करने के बाद पैगी कैलिफोर्निया में रहने लगी। वह कुछ समय गायज़ल टावर में रही। उसका विवाह भी वहीं हुआ। पैगी के बेटे का नाम टेडी था, वह टेड और हैलन के लिए नाती समान था। टेडी शान्त और कोमल स्वभाव का बच्चा था। वह टेड की तरह ही फ़नकार बनना चाहता था। वह उन चुनिन्दा लोगों में था जिसे टेड काम करते समय भी स्टूडियो में आने देते थे।
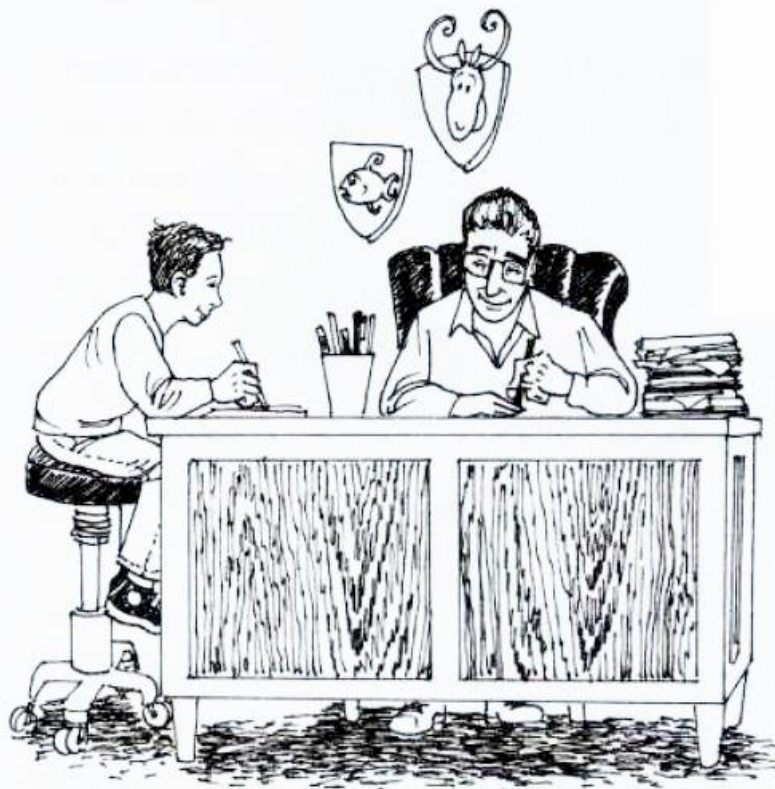
अगले दस वर्षों में टेड ने बारह किताबों की रचना की, जिनमें *कैट इन द हैट कम्स बैक, वन फिश टू फिश रेड फिश ब्लू फिश,* और *हॉप ऑन पॉप* शामिल थीं।

टेड की सभी कहानियाँ बेहद मज़ेदार थीं, पर वे कुछ बेहद गंभीर विचार भी सामने रखती थीं। जैसे उनकी रचना *यर्टल द टर्टल एण्ड अदर स्टोरीस्* एक तानाशाह के बारे में है, जो सबको धकियाता रहता है एक दूसरी किताब जो टेड के दिल के करीब थी, वह थी *द स्नीचेस् एण्ड अदर स्टोरीस्* । 1960 के दशक के शुरुआती सालों में काले लोग नागरिक अधिकार पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। टेड ने अपनी पुस्तक में पेट पर तारा-छाप वाले स्नीचों और बिना छाप वाले स्नीचों के बीच फसाद का वर्णन किया। किस्सा साफ करता है कि टेड उन लोगों को कतई नासमझ मानते थे जो दूसरों से सिर्फ इसलिए घृणा करते हैं क्योंकि वे अलग दिखते हैं।

इन किताबों की रचना करना आसान काम नहीं था। टेड सप्ताह के सातों दिन, हर दिन आठ घंटे अपनी मेज़ पर बैठ लिखते या चित्र बनाते। वे कहते कि उनका सबसे अच्छा काम तब निकलता है जब लिखते हुए वे खुद को एक कोने में फंसा लें - "जब किताब को खत्म करने का कोई रास्ता ही नज़र न आए।" और तब उन्हें लिख-लिख कर खुद को बाहर निकालना पड़ता।
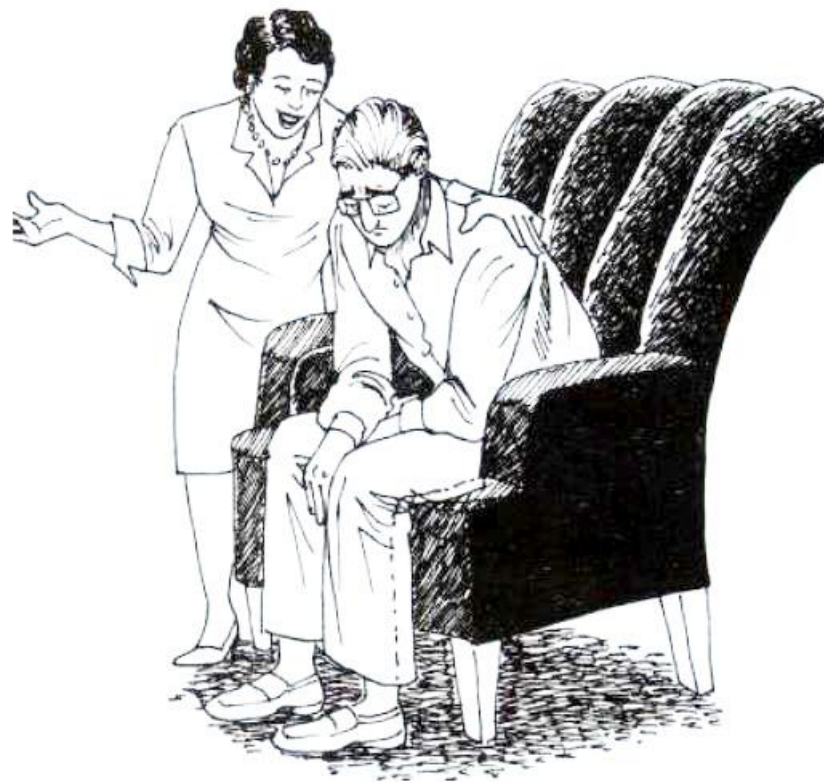
जब टेड का का मिजाज़ गड़बड़ता तब हैलन को ही इससे भी निपटना पड़ता। हैलन ने बताया था कि "हरेक किताब के खत्म होने के करीबन दो सप्ताह पहले ... वे मन में यह धार लेते थे कि किताब बिलकुल बेकार बनी है, उसका रत्ती भर भी अच्छा नहीं है।" तब हैलन को उन्हें समझाना-बुझाना पड़ता ताकि वे पूरी ही किताब को रद्दी की टोकरी में न डाल दें।

किताब खत्म करने के बाद भी उनकी हालत उतनी ही खराब बनी रहती। वे फिक्र करते, "मैं कभी कुछ नहीं लिख सकूँगा। मैंने अपना हुनर ही खो दिया है। मैं कुछ कर ही नहीं सकता।" यह सब तब तक चलता जब तक कि उनका आँका कोई चित्र उनके दिमाग में कुलबुलाने न लगे। ऐसा होते ही उनकी खुशमिजाज़ी वापस लौट आती।

टेड की ज़िन्दगी के केन्द्र में हमेशा काम ही रहा। पर वे कभी-कभी अवकाश भी लेते थे। हैलन और टेड को दुनिया भर में सफर करना अच्छा लगता था। उन्होंने मैक्सिको में हाथी सीलों को देखा। पेरु जा उन्होंने मम्मियों की खोज करने में मदद की। वे ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और हवाई भी गए।
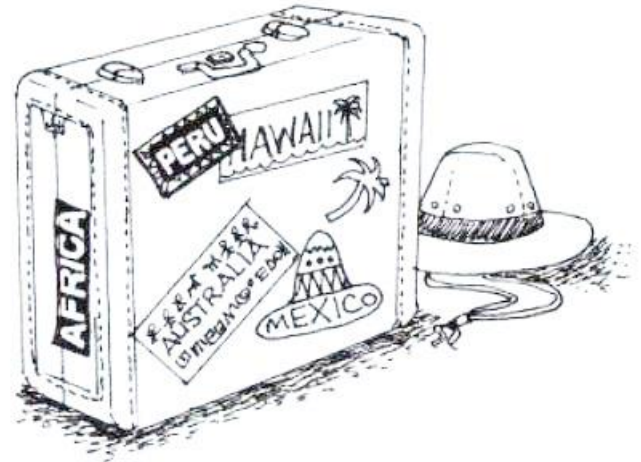
चीनी भाषा में ग्रिंच कैसे कहते हैं ?

圣诞怪杰

पहले-पहल डॉ. सूस की किताबें अमरीका के बाहर नहीं जानी जाती थीं। इंग्लैण्ड के निवासियों को लगा कि उनकी किताबें बेहद 'अमरीकी' थीं - यानी अभद्र, अक्खड़ और स्लैंग (कठबोल) से भरपूर! दूसरे देशों में भी इन्हें पेश करना कठिन था, क्योंकि डॉ. सूस की तुकबन्दियों और उनके गढ़े अजीबो-ग़रीब शब्दों का तर्जुमा कर पाना लगभग असंभव था। पर चतुर तर्जुमाकारों ने फिर भी कोशिशें कीं, और डॉ. सूस की ख्याति जल्द ही दुनिया भर में फैलने लगी। कालान्तर में उनकी किताबें बीस भाषाओं में अनुदित हुईं, जिनमें चीनी, स्वीडी, हिस्पानी, हिब्रू, माओरी, लैटिन, जापानी, यूनानी और यिडिश भी शामिल हैं।

टेड और हैलन को मेहमान-नवाज़ी का शौक था। उनके मेहमान पियानों के गिर्द इकट्ठा होते और गाते। कभी-कभार गायज़ल जोड़ा खास आयोजन भी करता - जैसे कैलिफोर्निया के तट के इर्दगिर्द हैलिकॉप्टर से यात्रा करना। साथ ही टेड और उनके दोस्तों को एक-दूसरे को बुद्धू बनाने में भी बड़ा मज़ा आता।

पर मशहूर हो जाने पर उनकी ख्याति ही उनका ज़्यादा से ज़्यादा समय खाने लगी। अकेले 1957 में ही उनके प्रशंसकों से मिले खतों का वज़न करीब एक हज़ार पाउण्ड था। वैसे इनमें से अधिकतर पत्रों का जवाब हैलन ही देतीं। वे इन जवाबों पर 'मिसेज़ डॉ. सूस' लिख दस्तख़त करतीं।

टेड को अब भी जनता के सामने बोलने से डर लगता था। पर वे अब मशहूर हो चुके थे, सो उन्हें यह करना ही पड़ता था। टेड ने पाया कि अगर वे अपनी बात छन्द में कहें तो वे बोल पाते हैं। एक बार पुस्तक विक्रेताओं के एक बड़े समूह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''जैसा सभी मौजूद श्रोता बेशक जानते होंगे ... गद्य में बोल पाने की काबलियत मुझमें है ही नहीं।''
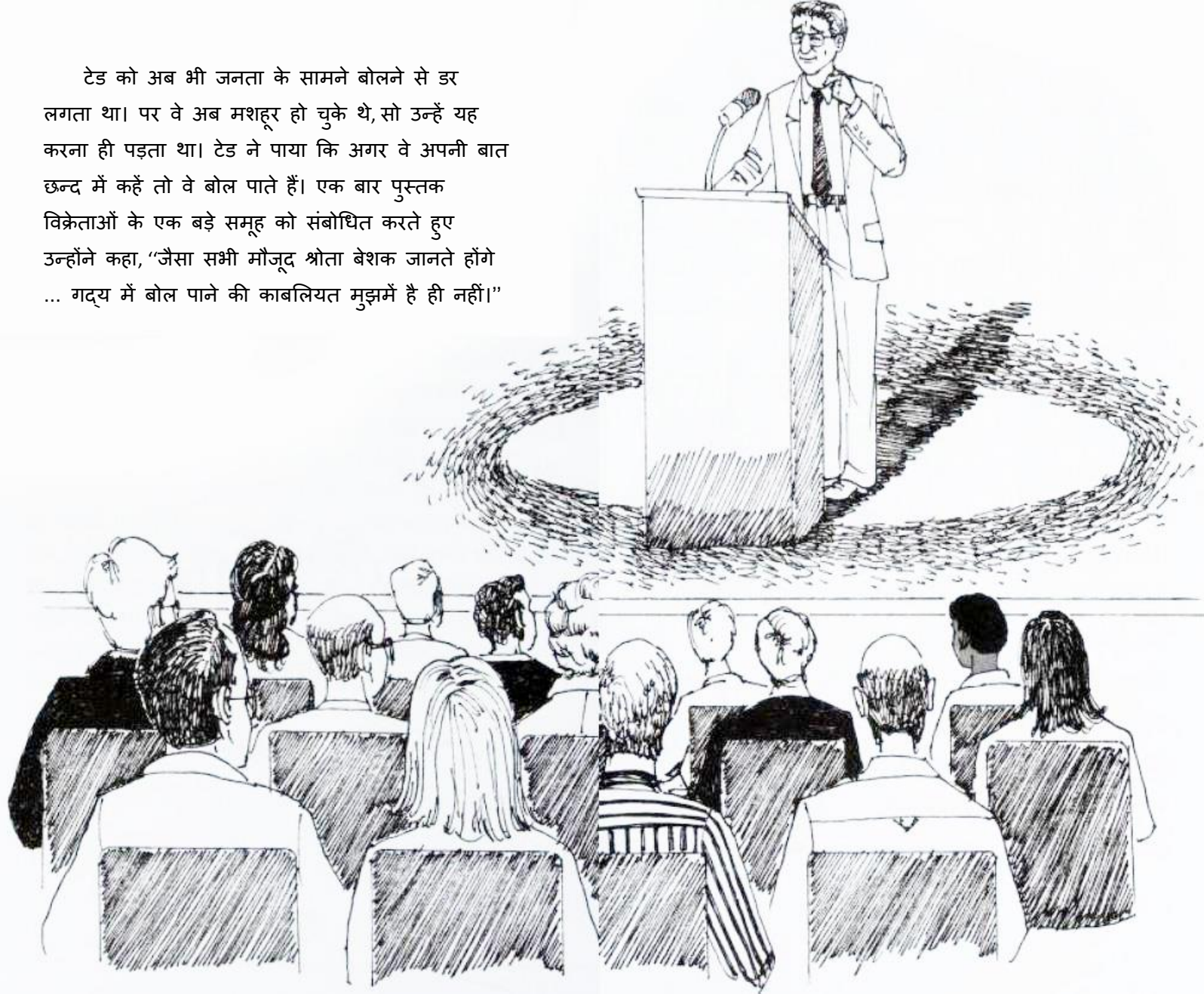
अध्याय 10

मैं पेड़ों की ओर से बोलता हूँ

कई खुशनुमा साल साथ-साथ गुज़ारने के बाद हैलन को फिर से रोग और अवसाद ने जकड़ लिया। 23 अक्तूबर 1967 को उनका देहान्त हो गया। वे अड़सठ वर्ष की थीं। पिछले चालीस वर्षों से उन्होंने टेड के लिए सब कुछ संभाला था। वे रुपए-पैसे का प्रबंध करती थीं, टेड को प्रचार के हमले से बचाती थीं और उनकी लिखी एक-एक पंक्ति पढ़ती थीं। टेड को अकेले सब कुछ करते जीना आता ही नहीं था। उन्हें एक साथी की सख़्त ज़रूरत थी। 1968 में टेड ने ऑड्री डिमन्ड से शादी कर ली, जो सालों से गायज़ल युगल की मित्र थीं।

टेड को यह बताने में बड़ा मज़ा आता था कि जब वे पहली बार ऑड्री से मिले थे उसने उनकी एक भी किताब नहीं पढ़ी थी। ना ही उसने डॉ. सूस का नाम ही सुना था। जब उन दोनों का परिचय करवाते हुए यह कहा गया - "और ये हमारे प्रिय डॉ. सूस हैं" - ऑड्री ने उन्हें एक चिकित्सक ही समझा था।

ऑड्री जल्द ही उनके काम में रुचि लेने लगीं। कुछ ही समय में वे टेड से उनकी किताबों की हरेक बारीकी पर चर्चा करने लगीं। ठीक उसी तरह जैसे हैलन किया करती थीं।

टेड और ऑड्री के विवाह के बाद टेड के पिता की नवासी वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। टेड अपने वयस्क जीवन में हमेशा यह चिन्ता करते रहे थे कि पिता को उनसे निराशा हुई है। कभी-कभी तो लम्बे समय तक वे एक-दूसरे से बात तक नहीं करते थे। पर
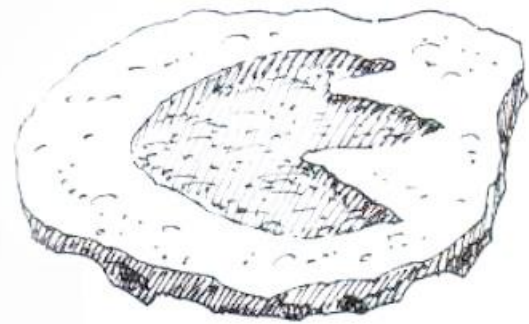
जैसे-जैसे टेड लेखक के रूप में सफल हुए और अपने जीवन से संतुष्ट भी, दोनों अच्छे दोस्त बने। टेड ने अपने पिता द्‌वारा बचपन में दिए गए डायनासोर के विशाल पंजे के छाप को हमेशा सहेज कर रखा। वे उसे अपने साथ एक से दूसरे घर ले जाते रहे।
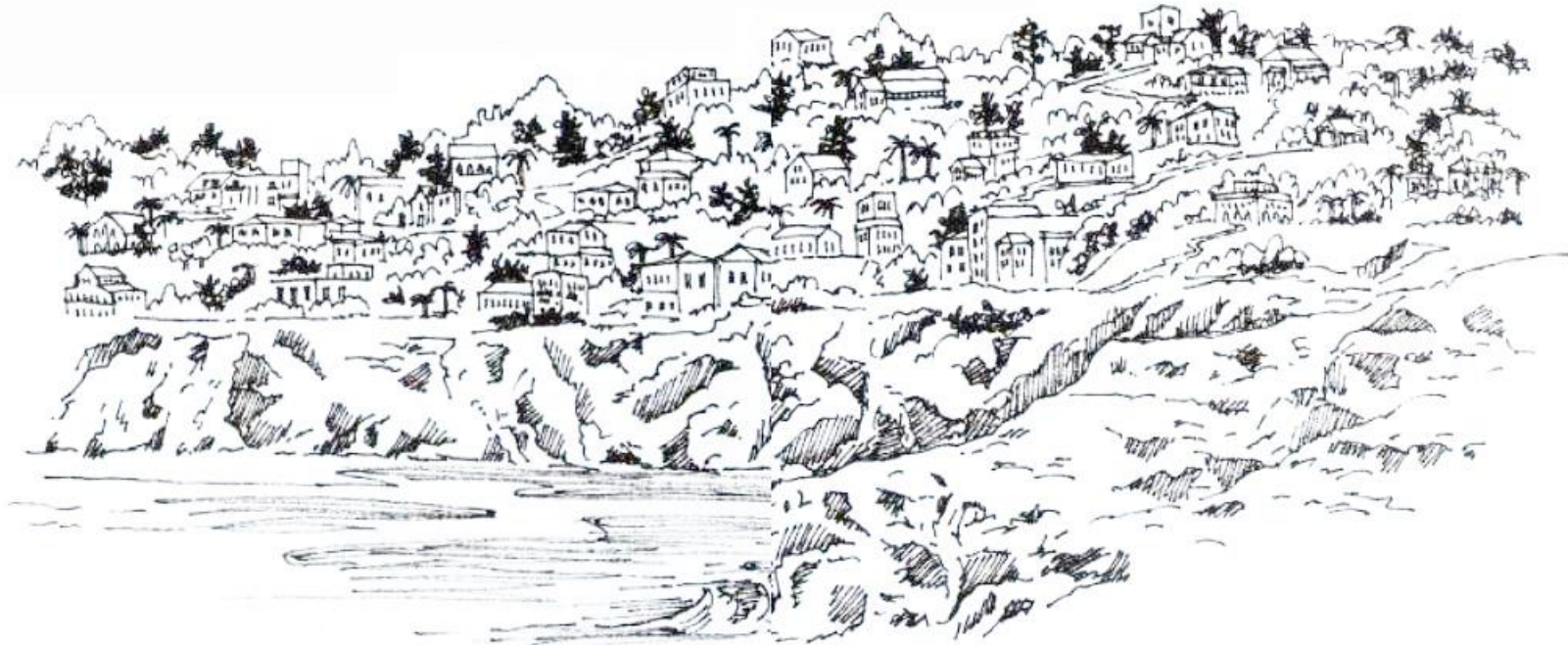
1970 तक ला होया स्थित गायज़ल टावर की खिड़की से नज़र आने वाला दृश्य बदल चुका था। जहाँ से एक समय समुद्र तट और पेड़ दिखा करते थे, अब केवल इमारतों से अटी पड़ी ज़मीन नज़र आती थी। टेड ने तय किया कि वे प्राकृतिक जगत की देखभाल पर एक किताब लिखेंगे। ऐसा पहली बार हुआ था कि उन्हें कहानी या किरदारों के पहले किताब का संदेश सूझा था।
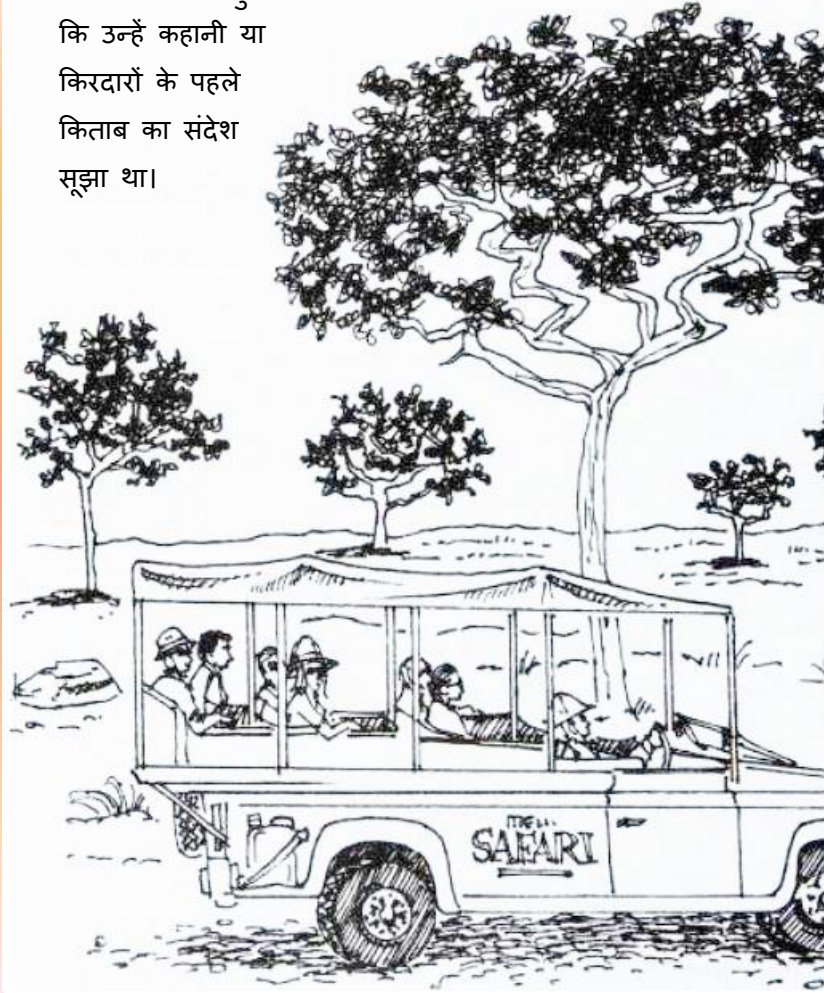
टेड ने बाद में कहा कि *द लॉरैक्स* को लिखना, "उन कामों में सबसे कठिन था, जो मैंने कभी भी किए हों।" उन्होंने प्रकृति के संरक्षण पर इतना कुछ पढ़ा और उन्हें प्राकृतिक जगत की इतनी परवाह थी कि यह किताब कहानी कम एक भाषण अधिक बनती जा रही थी। जब टेड लेखन में पूरी तरह अटक गए, ऑड्री ने उनसें कहा "अपन अफ्रीका चलते हैं।"

केन्या में टेड यह देख बिलकुल दंग रह गए कि वहाँ के कुछ पेड़ उनकी नई किताब के लिए आँके गए फूले-सूजे से पेड़ों जैसे ही दिखते हैं। "इन लोगों ने मेरे 'ड्रुफ्फुला' पेड़ चुरा लिए हैं," उन्होंने हैरत से भर कहा। एक जंगल सफारी के दौरान उन्होंने जंगली हाथियों के एक झुण्ड को पास से टहलते-गुज़रते देखा।
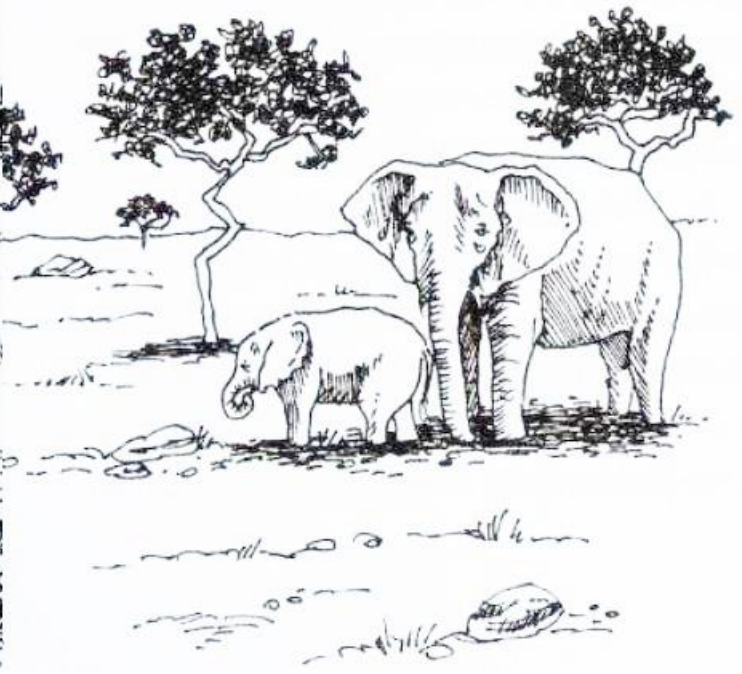
अचानक उन्हें समझ आ गया कि उन्हें किताब में कहना आखिर क्या है। उन्होंने कागज़ के कुछ टुकड़े लिए और एक ही रौ में लगभग पूरी कहानी लिख मारी।

द लॉरैक्स उस खूबसूरत प्रदेश की कहानी कहता है जहाँ 'ट्रुफ्फुला' पेड़ उगते हैं। वन्स-लर उन्हें काटना चाहता है ताकि अपने कारखानों मे उनका इस्तमाल कर सके। तब लॉरैक्स "पेड़ों के पक्ष में" आवाज़ उठाता है। यह किताब टेड की पसंदीदा किताब थी, पर शुरुआत में उसकी खास बिक्री नहीं हुई। लोगों को लगा कि किताब बड़ी उपदेशात्मक है। पर कुछ वर्षों बाद जब पर्यावरण संरक्षण का विचार सबका सरोकार बना, किताब को उसके पाठक मिले।

1989 में *द लॉरैक्स* डॉ. सूस की पहली किताब बनी जिसे सेंसरशिप का सामना करना पड़ा। पेड़ों को काट कर लट्ठे बनाने वाला उद्योग किताब को स्कूलों की पठन सूची से हटाना चाहता था। पर टेड का तर्क था कि वह काठ उद्योग के विरुद्ध नहीं है। "मैं खुद लकड़ी से बने घर में रहता हूँ और ऐसी किताबें लिखता हूँ जो पेड़ों से बने कागज़ पर छपती हैं।" टेड ने कहा कि वे सिर्फ इन्सानी लालच के ख़िलाफ हैं, जो प्राकृतिक जगत को होने वाले नुकसान को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करता है।

1984 में *द बटर बैटल बुक* प्रकाशित हुई। इसने भी कुछ लोगों को नाराज़ किया। किताब यूक्स और ज़ूक्स की कहानी कहती है जो एक-दूसरे के दुश्मन हैं। वे आपस में लड़ने के लिए लगातार और बड़े, और पेचीदा हथियार गढ़ते जाते हैं। आखिरकार उनके पास ऐसे अस्त्र-शस्त्र हो जाते हैं जो सबका विनाश कर सकते हैं। वे आमने-सामने यह सोचते खड़े हैं कि आगे भला क्या होगा। टेड को लगा कि वे कहानी का आश्वस्त करने वाला खुशनुमा अंत लिख ही नहीं सकते। क्योंकि वास्तविक जगत में अमरीका और सोवियत युनियन दोनों ही बड़े और अधिक शक्तिशाली शस्त्र बनाने की होड़ में जुटे थे। सो *द बटर बैटल बुक* में टेड ने यह फैसला पाठकों पर छोड़ा कि कहानी किस तरह खत्म हो।

कुछ लोग किताब को किताबघरों से ही हटवा देना चाहते थे। आखिर टेड ने दूसरे विश्वयुद्ध के समय अमरीका को जंग में शामिल होने की ज़रूरत का भरोसा दिलवाया था। अब वे जंग के विरोध में किताब भला क्योंकर लिख सकते थे? ऑड्री ने टेड को दिलासा देने के लिए कहा, "तुम सिर्फ बच्चों के लिए किताब नहीं लिख रहे हो, तुम मानवता के लिए लिख रहे हो।" किताब की सफलता ने ऑड्री के तर्क को सिद्ध कर दिया। यह पहली बच्चों की किताब थी जो *न्यू यॉर्क टाइम्स बुक रिव्यू* की वयस्कों की बेस्ट सैलर सूची में लगातार छह महीने तक बनी रही।

टेड मज़ाक में यह कहते कि शीत युद्ध की समाप्ति का श्रेय उनको जाता है। 1990 में *द बटर बैटल बुक* के एक रूपान्तर को सोवियत युनियन में टेलिविज़न पर प्रसारित किया गया। “और इस प्रसारण के तुरन्त बाद,” टेड संकेत करते, “सोवियत युनियन बिखरने लगा।”

अध्याय 11

ओह द प्लेसेस् यू'ल गो!

जिस वर्ष टेड ने *द बटर बैटल* बुक लिखी उसी साल उन्हें एक बड़ा सम्मान भी मिला - पुलित्ज़र पुरस्कार। यह पुरस्कार इसके पहले किसी ऐसे लेखक को नहीं दिया गया था जो बच्चों के लिए लिखता हो। टेड को इससे इतनी हैरत हुई कि वे खुद को यह भरोसा तक नहीं दिला सके कि यह कोरी गप्प नहीं हकीकत थी।

1990 *में ओह द प्लेसेस यू'ल गो!* छपी, जो उनके जीवन का सार पेश करती थी। पुस्तक के लिए बनाए गए चित्र भी उनके कला कर्म का सार थे। ध्यान से पढ़ें और देखें तो आप उनके आरंभिक किताबों की अनेक बारीकियों को इसमें पाएंगे। कहानी में डॉ. सूस सीधे पाठक से बात करते हैं। वे उन तमाम चुनौतियों और साहसिक कारनामों का वर्णन करते हैं जो किसी ऐसे युवा व्यक्ति के सामने पेश आती हैं, जो जीवन की राह पर कदम बढ़ाने वाला हो। वे अपनी पूरी बात हंसमुख तरीके से रखते हैं, पर कोई वादे नहीं करते: "क्या तुम सफल हो सकोगे ? हाँ, बेशक! (इसकी 98 और 3/4 फीसद गारंटी है)।

टेड को यह अहसास था कि शायद यह उनकी अंतिम किताब होगी। वे अब करीब छियासी वर्ष के हो चुके थे। वे आजीवन खूब सिगरेट पीते रहे थे। इस आदत को वे तब भी नहीं छोड़ पाए जब उनके दाँतों के चिकित्सक ने उनके मुँह में कैन्सर पाया। इसके दो वर्ष से कम गुज़रे होंगे कि 24 सितम्बर 1991 में टेड गायज़ल का सत्यासी वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। उन्होंने अपनी पत्नी से जो आख़िरी बातें कहीं उनमें एक यह थी, "मेरा जीवन अद्भुत रहा है। जो कुछ मुझे करना था वह सब मैंने किया। जहाँ रहना चाहता था, वहाँ रहा। मुझे प्यार मिला। सब कुछ मिला!"

टेड की इच्छा के अनुसार न उनका अंतिम संस्कार किया गया, न कोई कब्र बनाई गई। पर हर जगह लोगों ने उनका शोक मनाया और उन्हें प्यार से याद किया। डार्टमाउथ के छात्र और शिक्षक लगातार चौबीस घंटों तक बाहर खुले में बैठे और श्रोताओं को उनकी किताबों को पढ़ कर सुनाया।

टेड गायज़ल की मृत्यु के बाद भी डॉ. सूस जीवित रहे। अपने लेखन काल में उन्होंने करीब चालीस किताबें लिखीं थीं।
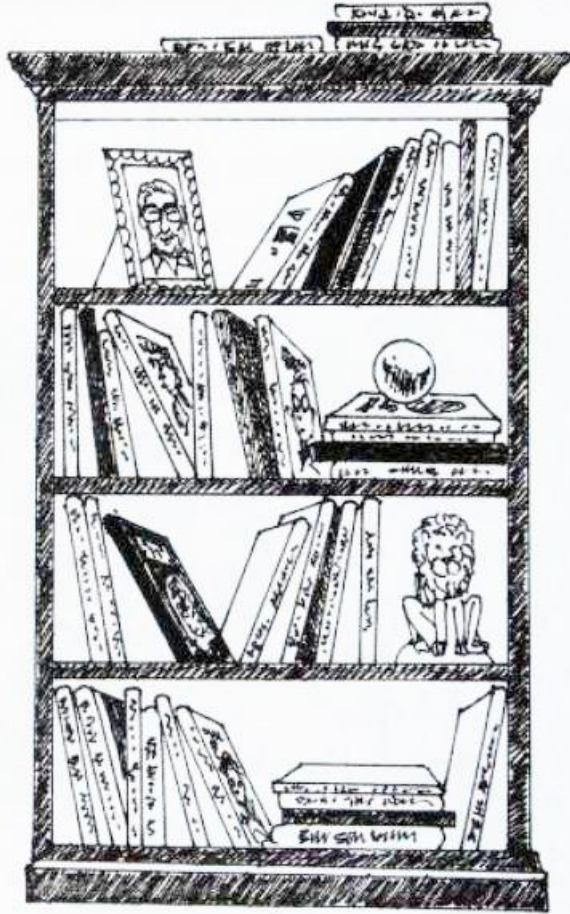
2001 में जब *पब्लिशर्स वीकली* ने अब तक की सबसे अधिक बिकने वाली 150 बाल पुस्तकों की सूची बनाई, तो उसमें 24 डॉ. सूस की रचनाएं शामिल थीं। एक अर्से तक टेड के एजेन्ट रहे व्यक्ति का अनुमान था कि अमरीका में जन्मे हर चार बच्चों में एक को जो पहली किताब दी जाती है वह डॉ. सूस की होती है। और *ओह द प्लेसेस यू'ल गो!* हाई स्कूल या कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने वालों दी जाने वाली सबसे लोकप्रिय भेंट है। सो थियोडोर सूस गायज़ल के जन्म के एक शताब्दी बाद भी अमरीका में अधिकांश लोगों का बचपन डॉ. सूस के साथ ही शुरू और खत्म होता है।

थियोडोर सूस गायज़ल के जीवन का तिथिक्रम

1904 - 2 मार्च को थियोडोर सूस गायज़ल का जन्म।

1921-1925 - डार्टमाउथ कॉलेज में अध्ययन।

1927 - हैलन पामर से विवाह

1928 - ‘‘क्विक हैनरी द फ्लिट! विज्ञापनों का चित्रण आरंभ किया।

1931 - डॉ. सूस के बनाए चित्र पहली बार किसी किताब में शामिल किए गए।

1937 - उनकी पहली किताब *एण्ड टु थिंक आई सॉ दिस ऑन मलबरी स्ट्रीट* का प्रकाशन।

1943 - युनाइटेड स्टेटस् आर्मी मोशन पिक्चर युनिट से जुड़े।

1954 - *हॉर्टन हियर्स अ हू* का प्रकाशन।

1957 - *कैट इन द हैट* और *हाउ द ग्रिंच स्टोल क्रिसमस!* का प्रकाशन। बिगिनर बुक्स के अध्यक्ष बने।

1960 - *ग्रीन एग्स एण्ड हैम* का प्रकाशन।

1966 - *हाउ द ग्रिंच स्टोल क्रिसमस!* का टेलिविज़न पर प्रसारण। ऑड्री डिमण्ड से विवाह।

1984 - बाल साहित्य में योगदान के लिए विशेष पुलित्ज़र पुरस्कार से सम्मानित।

1991 - 24 सितम्बर को डॉ. सूस का देहान्त।

वैश्विक तिथिक्रम

1904 - संयुक्त राज्य अमरीका ने पनामा कैनाल का कार्य आरंभ किया।

1914 - प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हुआ।

1918 - प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ।

1920 - अमरीका में शराबबन्दी लागू।

1929 - महामन्दी की शुरुआत।

1933 - लूनी ट्यून्स में डैफी डक को पहली दर्शाया गया।

1939 - द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ।

1945 - द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त।

1954 - *ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एज्युकेशन* मुकदमे ने अमरीकी स्कलों में नस्ली पृथक्करण को गैर-कानूनी बना दिया।

1957 - सोवियत युनियन ने *स्पुतनिक 1 और 2* का प्रक्षेपण किया। व्हैम-ओ ने पहली फ्रिसबी का निर्माण किया।

1964 - संयुक्त राज्य नागरिक अधिकार कानून पारित हुआ।

1969 - मानव सहित *अपोलो 11* चाँद पर उतरा।

1975 - माइक्रोसॉफ्ट की स्थापना।

1991 - सोवयत युनियन बिखर गया।